आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 24 | उदयपुर शुक्रवार 01 जनवरी 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

तेरह संतान होने पर भी नि:संतान रहीं बुआजी

इसे विधि की विडम्ब छलना ही कहा जाएगा कि तेरह-तेरह संतानों को जन्म देकर भी हमारी बुआजी नि:संतान ही रहीं। इससे बड़ा व्यंग्य किसी महिला के साथ और क्या हो सकता है।

भारतीय मानस में किसी महिला का कुंवारी रहना और विवाह के बाद उसकी कूख सूनी रहना, दोनों ही ठीक नहीं माने गये इसलिए उसे रजस्वला होते-हाते ब्याह दी जाती है। कई तो पहले ही उसके पीले हाथ कर देते हैं हालांकि अब जो नियम-कानून बन गये हैं उनके अनुसार बाल विवाह सख्त अपराध हो गया है और यों भी कोई लड़की अर्ली मेरीज करना नहीं चाहती है। उसका मुख्य ध्यान और ध्येय अच्छी शिक्षा ग्रहण करना रह गया है जो सभी दृष्टियों से सार्थकता लिए है।

पहले का समाज और रिवाज बड़े खोटे थे। यह आज समझा जा रहा है पर उस समय और परिस्थितिजन्य परम्परा के अनुसार ही प्रत्येक समाज के अपने नियम, धारणा और अनुशासन होते हैं। इसी में बंधते, जकड़ते व्यक्ति को जीवन बसर करना होता है। धीरे-धीरे सभी अभ्यस्त हो जाते हैं और तदनुसार ही अपने कर्तव्य और अधिकार में रहकर जीवनधर्मिता का राजीखुशी निर्वाह करते हैं। सब मिलजुल कर 'बंधी मुट्ठी लाख की' पालना करते अपने अतीत को वर्तमान में पोते हुए भविष्य की पाल मजबूत करने की उम्मीद जगाये रहते हैं।

आज यह सोच बार-बार रगड़ी दे रहा है कि तब हर औसत महिला अधिक नहीं तो भी आधा दर्जन संतान तक पैदा करने की हूंस रखती थी जबकि अब तो 'संतान एक या दो ही अच्छी' का नारा ही हर परिवार का आदर्श बना हुआ है।

पूछने पर गांव के अपढ़ समाजशास्त्रियों ने बताया कि तब संतान देना ईश्वर की मरजी माना जाता था। तब छोरियां अधिक होती। छोरे कम पैदा होते। उनमें सभी जीवित नहीं रहते। कुछ तो गर्भावास में ही सात मास्ये, आठ मास्ये होकर मर जाते।

कुछ के गर्भ ही गिर जाते फिर लड़के का जीवित रहना जरूरी समझा जाता कारण कि वही वंशधर होकर वंश चलाता और माता-पिता के बुढ़ापे की लाठी बनता। लड़की तो विवाहित होकर पर घर चली जाती फिर जब एक-के-बाद-एक लड़की ही पैदा होती तो लड़का होने की आश लगी रहती। कुछ नहीं होने या होकर किसी के नहीं बचे रहने पर गोद लेने की परम्परा रही जो आज भी है।

भारतीय समाज में पुरुष की तुलना में महिला की स्थिति सदैव दोयम दर्जे की रही जो लगभग आज भी देखने को मिलती है। जिन जातियों में दापा प्रथा या नाता प्रथा है वहां की औरत क्रय-विक्रय जैसी स्थिति में ही रही। वह केवल एक वस्तु का ही दर्जा लिये है। सवर्ण जातियों में भी विधवा का जीवन अच्छा नहीं रहा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो दो पंक्तियों में अबला स्त्री-जीवन का समग्र चरित्र ही झलकाते लिखा-

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।

पुरुष को छूट है कि वह जो चाहे सो करे। उसके लिए कोई बंधन नहीं है। वह स्वेच्छाचारी बना रहे। गुप्तजी ने तो पंचवटी में कह ही दिया-

नरकृत शास्त्रों में सब बंधन हैं नारी को ही लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएं पहले ही कर बैठे नर।।

एक नारी आठ-आठ, दस-दस बार नाता करने को विवश होती रही जबकि एक पुरुष आठ-आठ, दस-दस विवाह करने को स्वतंत्र रहा है।

इसे विधि की विडम्ब छलना ही कहा जाएगा कि तेरह-तेरह संतानों को जन्म देकर भी हमारी बुआजी नि:संतान ही रहीं। इससे बड़ा व्यंग्य किसी महिला के साथ और क्या हो सकता है। भारतीय समाज में पुरुष की तुलना में महिला की स्थिति सदैव दोयम दर्जे की रही जो लगभग आज भी देखने को मिलती है। पुरुष को छूट है कि वह जो चाहे सो करे। उसके लिए कोई बंधन नहीं है। एक नारी आठ-आठ, दस-दस बार नाता करने को विवश होती रही जबकि एक पुरुष आठ-आठ, दस-दस विवाह करने को स्वतंत्र रहा है।

हमारी बुआजी का तो पूरा जीवन ही विडम्बनाओं का दस्तावेज रहा। सुए की चोंच जैसी नुकीली उनकी नाक थी। जरा सी गंदगी भी उनको पसंद नहीं थी। घर का एक-एक कोना चकाचक बना रहता जैसे फूंक दे-देकर संवारा गया है। पूर्वजन्म में उन्होंने ऐसे क्या पाप किये कि इस जन्म में भुगतने को विवश होना पड़ रहा है। अनेक समझेबुझों से सम्पर्क किया गया। अनेक देव-देवरे धोके गये। छाण पड़ाई गई। पूर्वजों को रातिजगा दिया गया। आखड़ी ली गई। झाड़फूंख, तंतर-मंतर, टोने-टोटके भी खूब किये पर वही ढाक के तीन पात। लोगों में यह प्रतिक्रिया खूब रही कि जो बुआजी जीवनभर बड़ी साफसूफ चतुराई से रहीं, आखिरी वक्त उन्हें अपने माथे पर टोपले-टापले जुंएं और आंखों में डड़बे-डड़बे आंसू में बिताने की बेचैनी झेलनी पड़ी। याद आया 'अति सर्वत्र वर्जयेत।'

हमारी बुआजी का तो पूरा जीवन ही विडम्बनाओं का दस्तावेज रहा। बुआजी भी चार थे। उनमें से तीन तो मैंने भी नहीं देखे। दो के तो एक भी संतान नहीं हुई। चौथे सबसे छोटे भूरी बुआ थे। वे गौरवर्णा थे। सुए की चोंच जैसी नुकीली उनकी नाक थी। उनकी तुलना में फोफासा को बुढ़ापे ने जल्दी घेर लिया था।

वे बड़ीसादड़ी के पास के गामड़े में वणज करते थे। अपने छोटे से बैल पर बैठ वे एकबार कानोड़ आये थे। हल्की सी याद पड़ती है, वह बैल इतना घोट्या था कि फोफासा की टांगों से निकल सकता था। मां से मैंने मजाक में कहा था, इतनी दूर से चलकर कैसे फोफासा इस नंद्ये पर सवार होकर आये होंगे।

उनके निधन के पश्चात बुआजी कानोड़ आईं और हम भी बड़ीसादड़ी दो-एक बार गये। उनका मकान, मेड़ी-ओवरा सब हर समय साफ सुथरे रहते। वे अत्यधिक सफाई पसंद थे। कोई आता तो वे उसका बड़ा ध्यान रखते। जरा सी गंदगी भी उनको पसंद नहीं थी।

घर का एक-एक कोना चकाचक बना रहता जैसे फूंक दे-देकर संवारा गया है। मां कहती, इतनी अधिक सफाई भी ठीक नहीं। वैसे भी अति कहीं भी स्वीकार्य नहीं है। यह सर्वत्र ही वर्जित है।

बुआजी का तेरह संतान होकर भी नि:संतान बना रहना सर्वत्र चर्चित उदाहरण बन गया था। महिलाएं कहने भी लगीं कि इससे तो वे बांझ बने रहते तो ही अच्छा था। परबले पो अर्थात् पूर्वजन्म में उन्होंने ऐसे क्या पाप किये कि इस जन्म में भुगतने को विवश होना पड़ रहा है। अनेक समझेबुझों से सम्पर्क किया गया। अनेक देव-देवरे धोके गये। छाण पड़ाई गई। पूर्वजों को रातिजगा दिया गया। आखड़ी ली गई। झाड़फूंख, तंतर-मंतर, टोने-टोटके भी खूब किये पर वही ढाक के तीन पात।

किसी ने खबर दी कि पास के मूंजवा गांव में कोई समझाबुझा अड़भोपा आया है जो कई तरह की अड़क विद्या का जानकार है। उसके वहां पूछना कराई जाय। वहां दिनभर लोगों की टाटी लगी रहती है। यह सुन एक आश बंधी कि हो सकता है उसकी वाणी फले तो बुआजी की कोख से कोई जिन्दा बचे ताकि उनका वंश आबाद हो और बुढ़ापे की लाठी बने।

मूंजवा का वह अड़भोपा ठीक निकला। उसने बुआजी का चेहरा देखकर ही बता दिया कि इनके संतानों का जोग तो बहुत लिखा पर जीवित कोई नहीं रह पाती है।

इनकी पीठ पर एक संपणी कुण्डली मारे बैठी है जो संतान होते ही उसका भख ले लेती है। यह बात बिजली की तरह सब ओर कौंध गई। अड़भोपे ने कपास की पतली वणेटी (डण्डी) का सिरा गर्म कर संपणी का मुंह बाळ दिया जिससे न रहे बांस न बजे बांसुरी कहावत चरितार्थ हो गई। भुआजी को आगे संतान प्राप्ति होना बन्द हो गया। उनकी पीठ पर उभरी संपणी मैं तो नहीं देख पाया पर मेरी मां और जीजां ने देखी जिसका वे अक्सर जिक्र किया करती थीं।

परम्परा का निर्वाह करते बुआजी ने अपने समगोत्री को गोद लिया। गोद लेने वाला अक्सर बालक होता है पर उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को रखा जो सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थे पर उम्रदराज होने से उनके रहते ही हरिशरण हो गए तब वही मुश्किली आ पड़ी। जो बुआजी जीवनभर बड़े साफ-सुथरे अपने और अपने घर को साफसूफ झकाझक रखते रहे उनको अन्तिम समय में मैंने बड़ी दुरावस्था में देखा।

उन्हें ठीक से संवारने वाला कोई नहीं रहा। वे उतने ही मटमैले और दुर्दिनों के शिकार बने रहे। उनके सिर के सारे बाल झड़ गये थे और जो कुछ खूंटे रह गये थे उनमें तरबतर कीड़ों की तरह जुओं और नीखों की बेचैनी झेलते बिस्तर पर पड़े-पड़े बमुश्किल स्वांस खींचते अन्त हुआ।

लोगों में यह प्रतिक्रिया खूब रही कि जो बुआजी जीवनभर बड़ी साफसूफ चतुराई से रहीं, आखिरी वक्त उन्हें अपने माथे पर टोपले-टापले जुंएं और आंखों में डड़बे-डड़बे आंसू में बिताने की बेचैनी झेलनी पड़ी। याद आया 'अति सर्वत्र वर्जयेत।'

- म. भा.

नेमिकुमार गोर्द्धनोत का असामयिक निधन

उदयपुर (विज्ञप्ति)। महावीर युवा मंच के होनहार अध्यक्ष रहे नेमिकुमार गोर्द्धनोत (जैन) का 21 दिसम्बर को निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी डॉ. सुमन जैन तथा ख्याति एवं लाभा नामक पुत्रियों के साथ भरपूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन से युवा मंच के सभी सदस्यों को गहरा आघात लगा। शोकांजलि सभा में कई सदस्यों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रेरणादायी बताया।

मंच के संरक्षक प्रमोद सामर ने कहा कि नेमिकुमार जैन बड़े ही धर्मनिष्ठ, सेवापरायण तथा दिलेर व्यक्ति थे। अध्यक्ष काल में मंच के मार्फत उन्होंने बड़े उल्लेखनीय कार्य कर अपनी छाप छोड़ी। वर्तमान अध्यक्ष डॉ. स्नेहदीप भाणावत ने कहा कि वे स्नेहशील व्यवहार, मिलनसारिता तथा जैन संस्कारों के सुधि श्रावक होने से समाजजनों में सम्माननीय भूमिका लिये थे। सचिव विक्रम भण्डारी ने उन्हें समतावादी, सर्व सहयोगी तथा जीवटवाला स्मृतिशेष साथी बताया।

राजस्थानी के सुकवि माधव दरक नहीं रहे

राजस्थानी मायड़ भाषा के सर्व चर्चित सुकवि माधव दरक का 26 दिसम्बर 2020 को अपने पैतृक स्थान कुंभलगढ़-केलवा में निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष के थे। संप्रति संस्थान द्वारा आयोजित शोकसभा में विभिन्न साहित्यकारों ने उनके निधन को जनभाषा मेवाड़ी की काव्यशक्ति की अपूरणीय क्षति बताते उन्हें शालीनता, सहजता और सरलता का सर्वाधिक लोकप्रिय जनकवि बताया।

कवि अजातशत्रु ने कहा कि माधवजी उनके पहले काव्यगुरु थे जिन्होंने पहली बार मंच देकर मंचीय कवि के रूप में स्थापित किया। उनकी 'मायड़ थारो वो पूत कठै' कविता हर चौथे मेवाड़ी के मोबाइल की रिंगटोन ही बन गई। वे जहां भी 'एड़ो म्हारो राजस्थान' सुनाते, हजारों हाथ हवा में लहराकर उनकी वाहवाही में तालियों की गूंज दिये अथक बने रहते।

डॉ. देव कोठारी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य तुलसी पर लिखी 'आप पधारे जहां तुलसी' कविता सुनाकर उन्होंने पूरे देश में धर्मक्रान्ति का शंखनाद किया। उनकी 'जैनाचार्य तुलसी' कविता तो हर समारोह की शीर्ष शोभा ही सिद्ध हुई।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने माधवजी के पिछले पचास वर्षीय सम्पर्क की याद ताजा करते बताया कि पहली बार 03 जनवरी 1953 को उन्होंने लेकपेलेस में महाराणा भूपालसिंहजी के दर्शन कर 'मंगरा रे बीच राण कुंभा, कुंभलगढ़ किलो बंधवायो' कविता सुनाकर 250 रूपये का पुरस्कार प्राप्त किया। उनकी प्रेरणा से तेरापंथ के अग्रणी श्रावक सवाईलाल पोखरना ने बम्बई तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा एक भव्य समारोह आयोजित कर माधवजी का एक लाख ग्यारह हजार एक सौ एक रूपये से बहुमान कराया। उनकी 'आप पधारे जहां तुलसी' पुस्तक भी डॉ. भानावत ने अपने ही मंगल मुद्रण में प्रकाशित की।

किशन दाधीच का कहना था कि उनके कण्ठ में मेवाड़ी की मिठास का यह प्रभाव रहा कि पूरे देश में वे अन्त तक आमंत्रित किये जाने वाले सर्वाधिक लोकप्रिय जन-जन के चहेते रसदार कवि बने रहे। उन्होंने दुख जताया कि कोरोना काल में ही उदयपुर के हरमन चौहान, कृष्णकुमार सौरभ भारती, पुरुषोत्तम छंगाणी जैसे कवि-मित्रों का असह्य बिछोह रहा।

डॉ. तुक्तक भानावत के अनुसार माधवजी जब भी उदयपुर आते, चेटक स्थित कार्यालय में अवश्य आते। उन्होंने बताया कि अरविन्दसिंहजी मेवाड़ ने भी अपने महलों में माधवजी को आमंत्रित कर उनसे 'एड़ो म्हारो राजस्थान', 'शिव दर्शन' तथा 'मेवाड़ दर्शन' कविताएं सुनीं और न केवल उन्हें पचास-पचास हजार से पुरस्कृत किया अपितु उनका प्रकाशन भी करवाया।

डॉ. इकबाल सागर के अनुसार प्रतिवर्ष प्रताप जयंती प्रताप स्मारक मोती मगरी पर आयोजित कवि सम्मेलन में माधवजी ही मुख्य किरदार के रूप में छाये रहते। पहली बार उन्होंने ही 'मायड़ थारो वो पूत कठै' कविता सुनाई थी जो सर्वाधिक सराही गई।

डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि उनकी काव्य शक्ति से अभिभूत हो कलकत्ता के एक श्रीमंत ने उन्हें दस हजार रूपया प्रतिमाह की सम्मान राशि भेजी।

कवि सम्मेलनों के सूत्रधार प्रकाश नागोरी ने कहा कि माधवजी ने अपनी रचनाओं द्वारा 60 वर्ष तक पूरे देशवासियों को रसविभोर किया। वे कवि सम्मेलनों के सिद्ध सफल कवि के रूप में लोकप्रियता के चरम पर रहे। उनके कनिष्ठ भ्राता रमेश चैतन्य भी प्रारम्भ में अच्छे कवि के रूप में उभरे। डॉ. भानावत ने तो अपनी लेखनी से उन्हें गुप्तबंधु मैथिलीशरण और सीयाराम शरण से भी उपमित किया।

इस अवसर पर डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', डॉ. ज्योतिपुंज, चकाचौंध ज्ञानपुरी, डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने भी संवेदनाएं व्यक्त कीं।

- डॉ. कहानी भानावत

पत्रकार महेश व्यास का असामयिक निधन

उदयपुर (का. सं.)। अपने सहृदय एवं स्नेहशील व्यवहार के लिए प्रसिद्ध सर्वप्रिय पत्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले महेश व्यास का 51 वर्ष की उम्र में 29 दिसम्बर को हृदयाघात से असामयिक निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

उनकी सबसे बड़ी खासियत यह रही कि घर-बाहर जहां कहीं उनसे भेंट होती, वे सदैव अपने लघु भ्राता संजय के साथ ही मिलते। दोनों का संयुक्त परिवार, संयुक्त रूप से कार्य करना, पत्रकारिता सम्भालना तथा शादी ब्याह, सभा समारोह में जहां कहीं जाना-आना होता कभी अकेले नहीं देखे गये। दोनों राम-लक्ष्मण की तरह दो शरीर एक प्राणबद्ध हो सतयुग की याद ताजा करते रहे।

पत्रकार संगठन जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि एक सक्रिय सदस्य के रूप में महेशजी सदैव आगेवाण रहे। उनके निधन पर आयोजित शोकांजलि में सुमित गोयल, शैलेष व्यास, संजय खाब्या, डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली, अजयकुमार आचार्य, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, पवन खाब्या, अल्पेश लोढ़ा, विकास बोकड़िया, डॉ. महेन्द्र भानावत, राजेन्द्र पालीवाल, शैलेष नागदा ने महेशजी को उदात्त मानवीय गुणों एवं पत्रकारिता के सजग सिपाही के रूप में याद किया।

पोथीखाना

डॉ. दिलीप धींग की तीन कृतियां

सौ तथ्यों में जैन दिवाकरजी का जीवन सत्य :

जैन दर्शन, साहित्य और संस्कृति के धर्मजीवी लेखक डॉ. दिलीप धींग द्वारा विविध शीर्षकों में जैन दिवाकरजी के नाम से लोकप्रिय चौथमलजी महाराज के जीवन चरित्र से सम्बन्धित मुख्य-प्रमुख सौ तथ्यों का संक्षिप्त किन्तु सारपूर्ण परिचय देती यह पुस्तिका कई दृष्टियों से मूल्यवान बन पड़ी है।

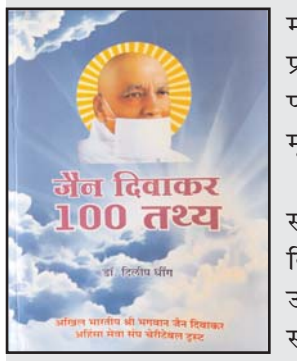

जैन दिवाकरजी ने किसी जैन सम्प्रदाय, संगठन किंवा संघ की स्थापना नहीं की न किसी के आचार्य, उपाध्याय ही बने किन्तु उनका प्रभाव इतना जबर्दस्त रहा कि वे जैनेतर सभी जातियों में समानभावी श्रद्धास्पद सन्त बने रहे। राजा-महाराजाओं से लेकर ठाकुर, उमराव तथा श्रेष्ठीजन के साथ-साथ छोटी-छोटी जातियों के लोग, यहां तक कि आदिवासी तथा सामान्य जन से विलग रहने वाले समुदाय तक के प्राणी उनकी धर्मसभा में आकर उनके दर्शन एवं उपदेश श्रवण का लाभ लेते थे।

दिवाकरजी ने अनेक लोगों को व्यसन मुक्त किया। बलिप्रथा बन्द करवाई। अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों के विरूद्ध अपनी आवाज उठाई। मद्य-मांस के त्याग करवाये। जातिगत एकता तथा सौहार्दमय जीवनचर्या व्यतीत करने पर बल दिया। आडम्बरों, ढकोसलों पर चोट की। दीक्षा पूर्व वे अच्छे खिलाड़ी थे। रात-रात अभिनीत होने वाले रात्रि मनोरंजक ख्याल तमाशों में भाग लेते अनेक देशी राग-रागनियों तथा लोकप्रिय छन्दों में अनेक लावणियों, भजनों तथा ढालों की रचना की। उनके सम्बन्ध में प्रकाशित अनेक ग्रन्थों, ग्रन्थावलियों, पत्र-पत्रिका विशेषांकों से विद्वान लेखक ने सारपूर्ण सन्दर्भ एकत्र कर अपने ढंग से उनका लेखन कर पुस्तिका को अधिकाधिक उपयोगी, सारपूर्ण एवं सुगम बनाया है।

अखिल भारतीय श्री भगवान जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ चेरिटेबल ट्रस्ट इन्दौर से प्रकाशित 52 पृष्ठीय यह पुस्तिका सौ रूपया कीमत लिये है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

कंपेंडियम ऑफ समयसार :

आचार्य कुंदकुंद रचित समयसार एक आध्यात्मिक व दार्शनिक ग्रंथ है। प्राकृत भाषा के इस प्राचीन ग्रंथ पर अनेक विवेचन और व्याख्यान हुए हैं। डॉ. दिलीप धींग ने इस पर सरल व सटीक ग्रंथ लिखा, जो 2016 में 'समय और समयसार' नाम से प्रकाशित हुआ।

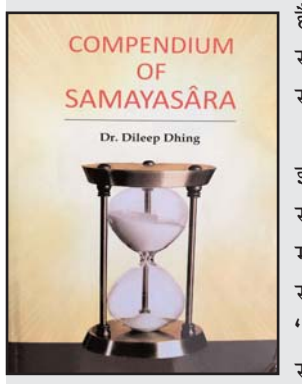

'कम्पेण्डियम ऑफ समयसार' नाम से इस शोधग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद हुआ। डॉ. संगीथा खारीवाल ने बड़े मनोयोग से ग्रन्थ की मूल भावना को सुरक्षित किया है जो बड़ा ही सटीक तथा हम ग्रन्थ बन पड़ा है। 'कम्पेण्डियम ऑफ समयसार' का अर्थ है समयसार का सार। इस 400 पृष्ठीय ग्रंथ में प्राकृत की गाथाएँ और हिन्दी के पद देवनागरी लिपि में भी दिये गये हैं। पाँच अध्यायों के बीस परिच्छेदों में समयसार का विश्लेषणात्मक और समीक्षात्मक परिशीलन किया है। इसमें अनेक अभिनव दृष्टियां हैं जिनमें पहली बार श्वेताम्बर जैन आगमों और ग्रन्थों के प्रचुर संदर्भ दिए गए हैं। इस दृष्टि से यह शोधग्रंथ सबके लिए सदैव पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बन गया है। जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान, चेन्नई एवं जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ, इन्दौर द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित यह ग्रंथ 500 रूपये मूल्य का है जो धर्म-समाजों के लिए वरेण्य है।

- डॉ. ज्ञान जैन

पानी से दीप :

'पानी से दीप' डॉ. दिलीप धींग की काव्यकृति है। अभुषा फाउण्डेशंस, चेन्नई से प्रकाशित इस 120 पृष्ठीय पुस्तक में 67 गीतिकाव्य हैं।

अभय श्रीश्रीमाल ने इस पुस्तक को 'सदाबहार फूलों का गुलदस्ता' बताते हुए लिखा कि इसमें हर रंग-सुगंध के काव्यपुष्प हैं जो सबके जीवन को सद्गुणों से महकाएँगे। इसमें कहीं श्रद्धा का झरना है तो कहीं संस्कृति की सरिता। कहीं तत्वज्ञान है तो कहीं मानवीय मूल्यों का गुणगान है। कहीं अहिंसा के शाश्वत स्वर हैं तो कहीं जीवन की समस्याओं के उत्तर हैं। पुस्तक में अलग-अलग छटाओं के एक से बढ़कर एक गीतिकाव्य हैं। विजया कोटेचा ने इस पुस्तक के कुछ बालकोपयोगी गीतों पर सीडी भी बनाई, जो बहुत लोकप्रिय हुई। इसमें नवकार से लेकर भवपार तक की काव्य-यात्रा है। बीच में सामाजिक और नागरिक जीवन को बेहतर बनाने वाली अनेक हृदयस्पर्शी कविताएँ हैं।

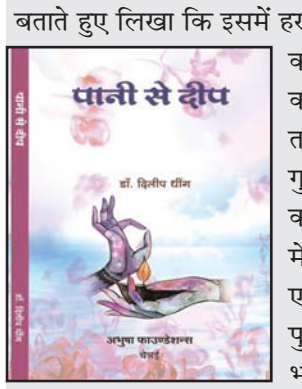

-जे. अशोककुमार शास्त्री

स्मृतियों के शिखर (114) : डॉ. महेन्द्र भानावत

टुकड़े-टुकड़े जिये किन्तु किसी के टुकड़ों पर नहीं पले डॉ. सहगल

मनासा के डॉ. पूरन सहगल से मेरा परिचय अधिक पुराना नहीं तो भी पांच दशक के मोट्यार के रूप में तो लेखांकित किया ही जा सकता है। जीने का भी एक आनन्द होता है मगर हर एक उसे नहीं भोग सकता। सामान्य मुसीबतों से ही लोग हस्तपस्त त्रस्त हो जाते हैं तब परेशानियों का पहाड़ उलीचने वाले सचमुच निराले ही होते हैं। ऐसे अनोखीलालों में डॉ. पूरन सहगल को मैं सदैव अपने साथ पाकर छटांग से पंसेरा बना रहता हूं।

पाकिस्तानी पंजाब के गांव पंचग्रई जिला नियावाली में 13 जनवरी 1937 को जन्में डॉ. सहगल का प्रारम्भिक जीवन घोर संघर्षों की गाथा लिए बस स्टेण्ड पर बोरिया-बिस्तर पीठ पर लादे लद्दू ऊंट की तरह शुरू हुआ। वहां से अन्य विस्थापित परिवारों के साथ इनका परिवार भी मनासा लाकर बसाया गया। तब उनकी उम्र मात्र 12वर्ष थी। तब के दंगों का दमनीय दंश जब वे याद करते हैं तो रौंगटे ज्वार के डंठलों की तरह सिहर उठते हैं। उनका दायां कंधा भाले से छेदी हो उस पार निकल गया था। यह हाथ बेकाम हो गया। ऐसे में इनकी पहचान एक हत्थी बालक की हो गई थी।

बालकवि बैरागी के साथ डॉ. सहगल तथा डॉ. भानावत

वहां से उर्दू में चौथी जमात पास पूरन यहां मनासा में पहली कक्षा पढ़ते मेट्रिक पास कर सके और फिर कृष्णा के साथ जीवनसंगी बने तब गांधीसागर बांध पर क्लर्की जोइन करली। क्लर्की जीवन याद करते वे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों का स्मरण करते हैं-

यह आधुनिक शिक्षा किसी विध, प्राप्त भी यदि कर सको।
तो लाभ क्या, बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।।
लिखते रहो जो सर झुका, सुन अफसरों की गालियां।
तो दे सकेंगी रात को, दो रोटियां घरवालियां।।

उनके साहित्यिक दौर की शुरूआत पढ़ाई के दौरान ही हो गई थी। कविता करने, भाषण देने तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान नाटकों में भाग लेने की कला के लिए वे सुयोग्य शिक्षक शिवनारायण शर्मा को वन्दन करते उस पहले अभिनय को याद करते हैं जब वे लड़की बन पूरे स्कूल के साथ अभिभावकों के लाड़ले बन गये थे। कवि के रूप में इधर-उधर 'मधु' नाम से उनकी कविताएं गूंजन देने लगीं।

इसी दौरान उनका परिचय बालकवि बैरागी से हुआ। वे अकेले ऐसे कवि थे जो दशपुर अंचल में बोली जाने वाली मालवी में कविता लिख मंचों पर प्रसिद्धि का चरम लिए वाहवाही पा रहे थे। मालवी के विद्वानों में तब डॉ. श्याम परमार, डॉ. चिंतामणि उपाध्याय तथा श्रीनिवास जोशी जैसे विद्वानों की तूती बोलती थी। इनकी मालवी का क्षेत्र इन्दौर, उज्जैन था और वे दशपुर में बोली जाने वाली को मालवी की उपबोली मानते उसे 'रांगड़ी' नाम से सम्बोधित करते थे।

डॉ. सहगल ने जब शोध शुरू की तो उन्हें यह नाम 'गंवई' लगा। उन्हें लगा कि दशपुरी मालवी का उपयुक्त नाम 'दशौरी' अधिक युक्ति संगत बैठता है। उन्होंने विनम्रतापूर्वक विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। अन्ततोगत्वा उनका यह अभियान सफल हुआ।

इसके लिए सहगलजी को बड़े पापड़ बेलने पड़े। संत पीपाजी को उन्होंने अपना शोध का विषय बनाया। यह उनके द्वारा किया गया पहला कार्य था। इससे पूर्व किसी ने पीपाजी पर कोई काम नहीं किया था। उन पर लिखा मात्र एक ही पद गुरु ग्रन्थ साहब में पवित्रता लिए था। ऐसे दुष्कर कार्य को सम्पादित करने के लिए उन्होंने जगह-जगह की खाक छान उसे अपने अंग पर भस्मीरस किया और पाया कि लोक का सागर जितना विशाल है उतना ही गहन गम्भीर है। इसमें जितने गोते लगाये जांय उतने ही अमूल्य मोती हाथ लगते जायेंगे।

वे अविराम अथक बढ़ते गए। कार्य करने के लिए दशपुर अंचल ही उनके लिए अखूट खान बना। उन्होंने पाया कि इस अंचल की मालवी सतरंगी मालवी है। इस मालवी में मेवाड़ी, हाड़ौती, मराठी और गुजराती शब्दों के तत्सम-तद्भव प्रभाव की बड़ी संजीदगी लिये है। पंजाबी उनकी जन्मना भाषा भी और मालवी कर्मना बनी। इस प्रकार उनके खाते में दो मातृभाषाओं का क्षीरनीर अमृततुल्य मट्ठा बना तो हिन्दी की मथनी आराध्या के रूप में अयोध्या सी रंगत पा गई।

ऐसे करते डॉ. सहगल ने दशौरी में चार दर्जन के करीब बड़ी लोकगाथाओं, अनेक लोककथाओं और लोकगीतों का विपुल संग्रह एवं सम्पादन किया। लोकगाथाओं की चर्चा के दौरान उन्होंने बताया कि उनकी पहली लोकगाथा 'डूंगजी जवारजी' थी जिसका प्रकाशन ही मैंने उदयपुर अपने मंगल मुद्रण में किया। यह बात सन् 1985 की है। यहीं से समझिये मेरा उनका अधिक नजदीकी का सम्बन्ध बना जो वामन से विराट रूप में हिये की आंख पाता रहा।

संत पीपा के बाद वे संत भगत तथा पीपाजी की जीवन संगिनी संताणी सीता पर काम करते नाथ संत-पंथ पर अपनी लेखनी चलाते रहे और इसी मार्ग की कठोर चट्टानी भूमि को तराशते विविध संतों की वाणियों के साथ चन्द्रसखी, रूपमती, नवनिधि, सुन्दर जैसी तथा वागड़ की कृष्णभक्त कवयित्रियों की बिखरी वाणी-सम्पदा को सम्भालने, संरक्षित करने में कटिबद्ध होगये।

शोध का बोध कहां-कहां तक बाजी मारता है, इसकी कल्पना का जायका तो वे ही लोग अधिक ले सकते हैं जो इस क्षेत्र में घुमन्तु बणजारे की बालद लादे फिरते हैं। डॉ. पूरन के साथ की गई यात्राओं में भी मैं कई बार पूर्ण हुआ। तीन-चार बार तो उज्जैन ही चले गये। उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय से पीएच. डी. करने के बाद कई बार वे वहां जाकर उसकी पेड़ी पर अपना मत्था टिकाकर टिकाऊ बने हैं। वे सविनय अपने गाइड डॉ. चिंतामणि उपाध्याय, परीक्षक डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के प्रति नमन भाव लिये कहते भी हैं कि मेरे शोधप्रबंध की पकाई में इन त्रि-विभूतियों का योगदान मैं यावत्जीवन कभी विस्मृत नहीं कर पाऊंगा।

मैं भी सहगलजी के साथ वहीं गया जहां के हिन्दी अध्ययन केन्द्र के दो सुपर हीरो डॉ. शैलेन्द्रकुमारजी और डॉ. जगदीशजी शर्मा का सान्निध्य पाया। एक और प्रसंग तो और अधिक स्मरणीय है जब वहां की परिकल्पा संस्था ने लोकमंगली सांझीकला पर एक बड़ा आयोजन किया था। उस संगोष्ठी में बालकवि बैरागी, डॉ. सहगल और मैं तीनों का सुखदायी साथ रहा।

जब मेरे बोलने की बारी आई तो मैं यह कहकर अपने मन में बांसों भरा उल्लास पी छलक पड़ा कि आज ही के दिन ठीक 50 वर्ष पूर्व 25 सितम्बर 1961 को धर्मयुग में मेरा श्राद्धपक्ष में कुंवारी कन्याओं द्वारा निर्मित घर की मुख्य देहरी-दीवाल पर गोबरफूली संझ्या के अंकन वाला 'गुड़ गुड़ गुड़ल्यो गुड़तो जाय' चित्रोपय आलेख छपा था। संध्या को कालिदास अकादमी में आयोजित एक सांस्कृतिक संध्या में जाना हुआ जहां सहसा मालवी के नामचीन लोकगीत गायक हीरासिंह बोरलिया से भेंट हो गई। हम उन्हें अपनी मण्डली के साथ भारतीय लोककला मण्डल के लोकानुरंजन मेले में उदयपुर एकाधिक बार आमंत्रित कर चुके थे। अब तो वे पद्मश्री हैं।

सहगलजी से अनेक मुद्दों पर हमारा पत्राचार होता रहा। पारिवारिक कुशलक्षेम से लेकर लेखन-पठन, समारोह-संगोष्ठी, शोध-समीक्षा, यात्रा-प्रसंग, विद्वानों से सम्पर्क, सामग्री-चयन, राय-मशविरा, प्रकाशन-प्रलेखन, त्यौहार-उत्सव जैसे अनेक पक्ष इन पत्रों से उजागर होते हैं। उन्होंने कितने पत्र लिखे होंगे, अनुमान लगाना मुश्किल है तब भी 60 से अधिक पत्र तो मेरे संग्रह की ही शोभा बने हुए हैं। शोध सम्बन्धी नई-नव्य जानकारियों से भी ये पत्र बड़े मूल्यवान तथा समृद्ध हैं। एक पत्र -

मनासा
18-07-2001

आदरणीय डॉ. महेंद्र भानावत
सविनय आदर

जब-जब संतों पर 'भीर' पड़ती है तब-तब वे प्रभु को पुकारते हैं। मेरा भी कुछ ऐसा ही स्वार्थमय व्यवहार है। 'भीर' पड़ते ही मैं भानावतजी को पुकारता हूं। प्रभु! मैं एक शोध दशपुर जनसम्पर्क के संतों की वाणी का संकलन सम्पादन तथा उनका दार्शनिक सन्देश पूरा करते-करते एक दूसरे शोध में प्रवेश कर गया हूं। वस्तुत: यह नया शोध उसी शोध में से निकला है। एक शोध कई नये शोध-द्वार खोलता है।

पिछले शोध में संतवाणी का संकलन करते-करते चन्द्रसखी मेरे जीवन से जुड़ गई। असल में उस शोध में जिन भजन मण्डलियों से मैं जुड़ा वे लगभग सभी निरगुणी भाव की मण्डलियां थीं। फिर भी चन्द्रसखी जो पहले से ही मेरे भीतर स्थित थी, जाग गई। जैसे उसे कृष्ण ने मोह लिया था, ठीक उसी तरह इस कृष्ण भक्त ने मुझे मोह लिया है।

मारवाड़ी भजन सागर में चन्द्रसखी के भजनों का संग्रह है। यह ग्रंथ ढूंढ़ पाना मेरे लिए तो बहुत कठिन है। आपका खोजी जीवड़ा यह काम सरलता से कर सकता है। यह बहुत कठिन काम है, बरसाती खड्डे में से मुंदरी ढूंढ़ने जैसा। मालवी के अलावा मेवाड़ी-मारवाड़ी भजन भी मिलें तो बात रसीली होगी। मदद करें। आपका अब तक का अनुभव व लोकमय मन मेरा मार्ग प्रशस्त करे।

भाई
पूरन सहगल

ऐसे और भी पत्र हैं जिनमें उनकी खोजी प्रवृत्ति के प्रति साधना, समर्पण, प्रशस्त प्रयत्न और गहरे पानी पैठने की ऊंडी दृष्टि की छटपटाहट मिलती है। उनके साथ मैं भी ऐसे ही लगा जैसे मेरा ही काम है और मैं भी लोक में बिखरे, कण-कण में बिखरे, गुप्त खजाने की खोज का अभ्यासी बनने का प्रशिक्षण पक्की बनता रहा।

मुझे याद आया सन् 1958 में राजस्थान विकास विभाग के सहयोग से भारतीय लोक कला मण्डल ने राजस्थान के प्रत्येक अंचल में बसे लोकगायकों, वादकों, नर्तकों तथा अनुरंजनी खेल-तमाशे करने, स्वांग लाने, लीलाएं करने, कठपुतलियां नचाने वाले कलाकारों को आमंत्रित कर दो माह के शिविर आयोजित किये थे। विकास विभाग के डवलपमेंट ऑफिसर भंवरलाल दशोरा मुझे बड़े भले, सरल एवं साधुमना अध्यात्म पुरुष ही लगे।

उनके सम्बन्ध में खोजबीन करते उनके भानजे भाई भगवान से मुझे पता चला कि वे बड़े भजनीक थे और स्वयं उन्होंने भी चन्द्रसखी के नाम-छाप के 250 के करीब पद लिखे। उन भजनों में कहीं 'चन्द्रसखी भज बाल कृस्ण छब', कहीं 'चन्द्रसखी ब्रजराज की शोभा' तो कहीं 'चन्द्रसखी की सुणो विनती' जैसी छाप मिलती है।

भाई भगवान उदयपुर के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और कला मण्डल के वरिष्ठ सदस्य होने के कारण मेरा उनसे घनिष्ट सम्बन्ध था। उन्होंने बहुत प्रयत्न किया मगर वे पद प्राप्त नहीं कर सके। बोले, भंवरजी का तो निधन हो चुका है और उनके लड़कों को भी पता नहीं कि उनका वह जखीरा कहां है।

मैंने सहगलजी को यह भी कहा कि मेवाड़ में ऐसे कई अनाम रचनाकार हुए हैं जिन्होंने विभिन्न चर्चित संतों, भक्तों के नाम से विपुल मात्रा में साहित्य सृजन किया है। मीरां, कबीर, चन्द्रसखी और तुलसीदास आदि और भी अनेक नामों के नाम-छाप की अनेक वाणियां मैंने कई भजन मण्डलियों में गायकों से सुनी हैं। - **शेष पृष्ठ सात पर**

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 जनवरी 2021

सम्पादकीय

नया पुराना होता जाता वर्ष

हर वर्ष दिसम्बर जाते-जाते हम अंत में नये वर्ष के आगमन की खुशियां मनाते किसी नव्य-भव्य की प्लानिंग करने लग जाते हैं। इस पर यदि गंभीरता से विचार करें तो कई बातें बनती हैं। क्या सचमुच में वर्ष व्यतीत हो नया आ रहा है? यदि वह नया आ रहा है तो नया आनेवाला ही कैसे है? क्या वह जहां जारहा है वहां नया नहीं बन रहा है? और जो आरहा है वह कैसे नया है? इस दृष्टि से आनेजानेवाले दोनों नये हैं।

ये दोनों आ भी रहे हैं और जा भी रहे हैं तो फिर नये ही नये हैं। ऐसी स्थिति में आने को नया और जाने को पुराना कहकर अपना मन मीठा करना ही है। सच तो यह है कि काल अथवा समय की ये दो ही नहीं, तीन पड़ाव हैं या फिर एक ही चक्र है जो निरंतर घूमता हुआ तीन होने का भ्रम देरहा है।

इनमें से कोई स्थिर नहीं है। तीनों ही चलायमान चलते पथिक बने हुए हैं। वे पथिक जो न जाने कबसे, कहां से चलते आ रहे हैं। न इनका कोई ओर समझ पाया है और न कोई छोर ही। ये पथिक सदैव ही अथक बने हुए हैं। इन्होंने चलना ही सीखा है, रूकना अथवा स्थिर होना नहीं। ये रहस्यमय बने हुए हैं जो हमारी समझ से भी बाहर हैं।

मोटे रूप में अथवा अपनी मोटी बुद्धि के अनुसार हम यह समझ बैठते हैं कि दिन में तो हम सब सक्रिय रहते हैं जबकि रात में विश्राम करते हैं। रात्रि का वातावरण इसीलिए शान्त चुप मौन रहता है कि सब अक्रिय रहते हैं पर ऐसा भी नहीं है। घड़ी दिन-रात चलती है तभी तो समय बताती है। रात्रि को जब सारा कोलाहल शान्त रहता है तो घड़ी की टिकटिक भी हमें सुनाई पड़ती है। यह टिकटिक तो दिन को भी चलायमान रहती है पर सुनाई नहीं देती।

पंचवटी में राम-सीता पर्णकुटी में रात्रि-विश्राम किये हैं। कुटी के बाहर लक्ष्मण पहरेदार बने चारों ओर सन्नाटा पसरा देख रहे हैं। वे नाना कल्पनाओं से मन में कई तरह के ख्यालों में आबद्ध हैं। कवि गुप्तजी चांदनी रात में लक्ष्मण की मनस्थिति को व्यक्त करते लिखते हैं-

क्या ही स्वच्छ चांदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा।
है स्वच्छंद सुमन्द गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं अब भी चलते हैं, नियति नटी के कार्यकलाप।
पर कितने एकांत भाव से, कितने शांत और चुपचाप।।

जो भी हो, नये वर्ष पर शब्द रंजन के सुधि पाठकों, लेखकों, सहयोगियों, विज्ञापनदाताओं तथा शुभेच्छुओं को हमारी शुभकामनाएं इस उम्मीद के साथ कि न केवल कोरोना से ही हमें मुक्ति मिलेगी अपितु हम अधिक उत्साह, चैतन्य और आशा उल्लास के साथ अपने समय को सार्थक प्रशस्ति देते हुए अपने राष्ट्र को विश्वव्यापी प्रतिष्ठा के लिए गौरवमंडित होते रहेंगे।

मुंदड़ा तथा चौबीसा जार की प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य मनोनीत

उदयपुर (का. सं.)। जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) की प्रदेश कार्यकारिणी के जयपुर में हुए चुनाव में उदयपुर के मुकेश मुंदड़ा तथा भूपेन्द्र कुमार चौबीसा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मनोनीत किए गए।

सहायक चुनाव अधिकारी रिछपाल पारीक ने बताया कि चुनाव में हरीवल्लभ मेघवाल को पुनः निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया जबकि

कार्यकारिणी में दीपक शर्मा प्रदेश महासचिव और राजेन्द्रकुमार न्याती को प्रदेश कोषाध्यक्ष चुना गया। मुख्य चुनाव अधिकारी एडवोकेट गणेश सारस्वत ने परिणामों की घोषणा की। इसी क्रम में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्यों में उदयपुर से मुकेश मुंदड़ा, भूपेन्द्र कुमार चौबीसा, श्रीमती सरिता शर्मा, भजनलाल, हरिनाम सिंह, कपिल वशिष्ट, सुभाष शर्मा, सुमित जुनेजा, दुर्गाशंकर शर्मा, विष्णु धीमान, सुभाष मित्रुका, साबिर खान, नीरज जोशी, डॉ. प्रमोद सागर, गिरिराज शर्मा तथा हसन रिजवान को मनोनीत किया गया। उदयपुर से मुकेश मुंदड़ा तथा भूपेन्द्र कुमार चौबीसा के मनोनीत होने पर जार के उदयपुर जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत एवं महासचिव अजयकुमार आचार्य ने बधाई प्रेषित की।

डॉ. महेंद्र भानावत कला समय लोकशिखर सम्मान से सम्मानित

उदयपुर (का. सं.)। लोकसंस्कृति और कलाओं के बहुआयामी संरक्षणात्मक कार्यों के लिए उद्भट संस्कृति मर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत को 'कला समय लोकशिखर सम्मान' से समादृत किया गया। यह सम्मान भोपाल की कला समय संस्कृति शिक्षा और समाज सेवा समिति द्वारा उदयपुर में स्थानीय संस्था प्रतिनिधि इतिहासकार डॉ. देव कोठारी तथा डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' द्वारा प्रदान किया गया।

उक्त संस्था की ओर से राजस्थान में यह विशिष्ट सम्मान पाने वाले डॉ. भानावत पहले विद्वान हैं। संस्था के संस्थापक सचिव तथा कला समय के सम्पादक भंवरलाल श्रीवास तथा अध्यक्ष पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' ने बताया कि कोरोना के चलते वे स्वयं नहीं पहुंच पाये।

डॉ. कोठारी ने डॉ. भानावत को शॉल ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट किया जबकि डॉ. जुगनू ने श्रीफल प्रदान कर प्रशस्ति वाचन किया।

डॉ. कोठारी ने लोकसंस्कृति के क्षेत्र में डॉ. भानावत के योगदान की चर्चा करते कहा कि पिछले छह दशक से इस क्षेत्र में सक्रिय रहने के फलस्वरूप ही वर्तमान में देश के प्रत्येक विश्वविद्यालय में लोकसाहित्य पर शोधकार्य हो रहा है। डॉ. जुगनू ने कहा कि डॉ. भानावत ने भारतीय लोकसाहित्य और लोककलाओं को विश्व फलक पर पहुंचाया है। उनके कार्यों पर देशभर में अनेक शोध-प्रबंधों का प्रणयन हुआ और हो रहा है। राजस्थान के लोकनाट्यों पर उनका पहला शोध अध्ययन राजस्थान की कलाओं को विश्व में पहचान स्थापित करने वाला रहा। धन्यवाद राजेन्द्र पालीवाल ने ज्ञापित किया।

पत्रकार मानवेन्द्र का देसूरी उपप्रधान बनने पर अभिनंदन

उदयपुर (का. सं.)। उदयपुर से अपने पत्रकारिता जीवन की शुरूआत करने वाले मानवेन्द्रसिंह राठौड़ पदमपुरा पिछले दिनों हुए ग्राम पंचायत चुनाव में देसूरी पंचायत समिति के उपप्रधान निर्वाचित किये गये। निर्वाचित होने पर पहली बार मानवेन्द्र के उदयपुर आने पर सम्प्रति संस्थान द्वारा सचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने उनका शॉल, उपरणा, पगड़ी तथा श्रीफल से भावभीना स्वागत एवं अभिनंदन किया।

मानवेन्द्रसिंह ने बताया कि आज वे जो भी कुछ हैं उसमें उदयपुर के पत्रकार साथियों का ही विशेष योगदान है। सन् 1988 में उन्होंने प्रातःकाल से अपना केरियर प्रारम्भ कर तदनन्तर उदयपुर

एक्सप्रेस, जय राजस्थान तथा जलते दीप में अपनी सेवाएं दीं। सन् 2003 से 2008 तक वे भास्कर राजसमन्द के ब्यूरोचीफ बने और फिर 2020 तक राजस्थान पत्रिका के चैनल 24 न्यूज के सम्पादक तथा पत्रिका टीवी के प्रभारी के रूप में जनसेवा से जुड़े रहे। वे दो बार लेकसिटी प्रेसक्लब के अध्यक्ष भी रहे।

उल्लेखनीय है कि मानवेन्द्रसिंह का अब तक का जनाधार जनसेवा प्रधान ही रहा। वे धलोप गांव सेवा सहकारी समिति के दो बार निर्विरोध अध्यक्ष और उसके बाद पिछले चौदह वर्ष से इसी पद पर आसीन हैं। अपनी विरासती देन का स्मरण करते उन्होंने बताया कि सेवा भावना के ये संस्कार उन्हें अपने पिताश्री दलपतसिंहजी से मिले जो गोडवाड़ के सिंह तथा मारवाड़ के लौहपुरुष के नाम से जाने जाते हैं। वे 35 वर्ष तक धलोप के सरपंच तथा देसूरी के दो बार उपप्रधान और फिर कार्यवाहक प्रधान बने।

कविराव मोहनसिंह को डी-लिट् की उपाधि

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि की ओर से मेवाड़ के अंतिम राजकवि राव मोहनसिंह को पृथ्वीराज रासो के सम्पादन एवं अनुवाद के कार्य पर मरणोपरान्त डी-लिट् की उपाधि प्रदान की गई।

कुलापधिपति प्रो. बलवंत एस. जॉनी ने कहा कि विद्यापीठ ने नई शिक्षा नीति को लागू करने का महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ कर दिया है जिसमें संस्कृति रक्षण और धरोहर को सुरक्षित रखने पर जोर दिया गया है।

समारोह अध्यक्ष विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने बताया कि कविराव मोहनसिंह के अधूरे पड़े साहित्य प्रकाशन के कार्य को पूरा करने में 3 वर्ष और लगेंगे। अपने 65 वर्ष के जीवनकाल में कविराव ने तीन दर्जन ग्रन्थों की रचना की जो हिन्दी व राजस्थानी भाषा की मजबूत नींव हैं। इसमें गद्य व पद्य दोनों शामिल हैं।

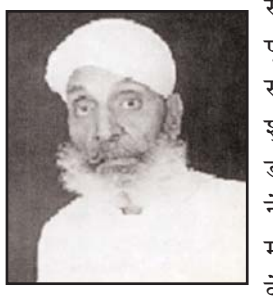

डी-लिट् की उपाधि कविराव मोहनसिंह के प्रपौत्र नरेन्द्रसिंह एवं गजराजसिंह ने प्राप्त की।

मुख्य वक्ता डॉ. राजेन्द्ररंजन चतुर्वेदी ने कहा कि लोकभाषा में बिखरे पड़े साहित्य को सहेज कर सम्पादित और प्रकाशित करने का कार्य अत्यन्त दुष्कर है जिसे कविराव मोहनसिंह जैसे विद्वान ही कर सकते हैं। गोविन्द गुरू जनजाति विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोड़ाणी ने नई शिक्षा नीति पर विस्तार से प्रकाश डाला। कविराव मोहनसिंह के परिचय का वाचन डॉ. उग्रसेन राव ने किया।

उल्लेखनीय है कि कविराव मोहनसिंह ने विद्यापीठ के साहित्य संस्थान में पृथ्वीराज रासो सबदकोश का कार्य शुरू किया। उन पर डॉ. महेन्द्र भानावत ने राजस्थानी में मोनोग्राफ लिखा जो केन्द्रीय साहित्य अकादमी से प्रकाशित हुआ। उग्रसेन राव ने उनके साहित्य पर पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

अपना देश : अपनी संस्कृति

एकलिंगजी मन्दिर में धजा चढ़ाने की परम्परा

मन्दिरों पर धजा चढ़ाने का भी पूरा संस्कार है। यदि इन धजाओं का ही अध्ययन किया जाय तो ऐसी बहुत सी सामग्री हाथ लग सकती है जो धजा परम्परा और उससे जुड़े देवता का रोचक इतिहास ही प्रस्तुत करदे। धजाओं के विविध रंग, उनके आकार-प्रकार, उनकी साज-सज्जा, उन पर लगे-धगे विविध कलात्मक चित्र-प्रतीक बड़ा रोचक दास्तान देते हैं। नाथद्वारा के श्रीनाथजी की सात ध्वजाएं, सातों अलग-अलग रंगों की। एक-एक धजा एक-एक लाख की। श्रीनाथजी को इसीलिए सात धजाधारी भी कहते हैं।

मेवाड़ का एकलिंगजी का मन्दिर बड़ा शान्त और सुखद पुरातन मन्दिर भगवान एकलिंगनाथ की सेवापूजा के लिए प्रसिद्ध है। मेवाड़ के महाराणा इन्हीं एकलिंगजी के दीवान हैं। यह दीवानी महाराणा प्रताप से प्रारम्भ हुई। कहा जाता है कि मीरां के पति भोजराज पहुंचे हुए शिव-भक्त थे। मीरां कृष्ण की भक्ति में सुधबुध खो बैठती तो भोज शिवमय हो स्व को भुला बैठते। राणा रतनसिंह इसीलिए मीरां और भोज दोनों से नाखुश थे।

भोज ने अपने जीवनकाल में चित्तौड़ में दस शिवलिंगों की प्रतिष्ठा की। सात तो चित्तौड़ के गोमुख की तलैया में ही स्थापित हैं। तीन जहां गोमुख का पानी निसर कर नीचे की ओर गिरने वाले कुण्ड में स्थापित हैं। एकलिंगजी वाला ग्यारहवां लिंग था जिसकी प्रतिष्ठा भोज करवाना चाहते थे पर उनके जीवनकाल में वैसा नहीं हो सका। मृत्यु के बाद जब उनके महल का सम्भाला लिया गया तो यह चतुर्मुखी लिंग बंधाबंधाया पैक मिला जिसे बाद में एकलिंगजी के मन्दिर, कैलाशपुरी में स्थापित किया गया।

जब यह मन्दिर बनकर पूर्ण हो गया तब इस पर कलश चढ़ाया गया पर रात को वही कलश गिर गया। दो-तीन बार जब ऐसी घटना घट गई तो महाराणा को इसकी जानकारी कराई गई। महाराणा को भी इस बात का बड़ा असमंजस रहा। उसी रात एकलिंगजी स्वप्न गये और महाराणा से कहा कि धारा नाम का एक दर्जी है। उसका यदि हाथ लगे तो कलश चढ़ सकेगा। सुबह पता लगाया गया। धारा वहीं रहता था। उसका हाथ लगा तो कलश चढ़ गया।

इस पर महाराणा ने धारा को बुलवाया और मुंह मांगा चाहने को कहा। धारा ने यही कहा कि मुझे तो और तो कुछ नहीं चाहिये। हुजूर से यही निशानी चाहता हूं कि मेरा नाम किसी तरह अमर रहे। तब वहीं धारेश्वरजी का मन्दिर बनवाया गया जिसमें शिवजी के मस्तक पर धारा अर्घ्य दे रहा है। यह मन्दिर एकलिंगजी के मुख्य दरवाजे के बांई ओर है।

धारा चूंकि दर्जी था तो दर्जियों ने कलश पर धजा चढ़ाने का अधिकार हांसिल कर लिया। तब से प्रतिवर्ष चेती अमावस्या को धजा चढ़ाने की रस्म पूरी की जाती है। धीरे-धीरे दर्जियों में जुदा-जुदा खांपें हुईं तो वे अपनी अलग-अलग धजा चढ़ाने लग गये।

इन खांपों में सुई दर्जी, छींपा दर्जी, सालवी दर्जी और रंगाड़ा दर्जी नामी चार खांपें हैं। महाराणा फतहसिंहजी के समय छींपा दर्जियों ने अपना प्रभुत्व अलग से दरसाया फलत: वे चेती अमावस्या की बजाय चेती पूर्णिमा को धजा चढ़ाने का अपना कार्यक्रम रखते हैं। शेष तीनों खांपों के दर्जी मिलकर चेत्रमास की अमावस, चेती अमावस्या को अपनी-अपनी धजा चढ़ाते हैं।

चेती अमावस्या के एक दिन पूर्व सभी दर्जी-परिवार एकलिंगजी मन्दिर में रात्रि जागरण करते हैं। इस दिन एकलिंगजी को हीरों का नाग धारण कराया जाता है। रातभर भजनभाव होते रहते हैं।

सुबह होते ही 'एकलिंगनाथ की जै' के उच्चारण के साथ धजा के लिए सफेद खादी के थान खुलते हैं। 30 इन्च करीब चौड़ी धजा के लिए थान के कंकू-केसर के छींटे देने के उपरान्त सिलाई चलती रहती है। फिर उसे एक पुरानी लकड़ी जिसे ये लोग गज कहते हैं, उससे धजा को नापा जाता है।

यह धजा 108 गज तक तो नापी जाती है, उसके बाद जितनी बड़ी और करनी होती है, की जाती है पर एक सौ आठ गज तक की लम्बाई होनी तो आवश्यक ही है। धजा के लिए प्रत्येक घर से दर्जी परवार एक-एक रूपया देता है। यह चन्दा भी धजा कहलाता है।

धजा की कोथली में सारा चंदा जमा होता है। प्रत्येक गांव वाले मिलकर अपना-अपना चंदा जमा कराते हैं। इसी दिन इनकी पंच पंचायती भी यहीं होती है। साल भर का लेखा-जोखा भी तब कर लिया जाता है।

सबसे पहले धजा मूल मन्दिर के सोने के छत्र से प्रारम्भ होती है। छत्र के धजा की किनारी बांध दी जाती है। उसके बाद जहां दर्शनार्थी खड़े रहते हैं वहां दरवाजे से उसका आंटा दे दिया जाता है। वहां के नंदकेशर मन्दिर के दरवाजे के आंटा शुरू कर निजमन्दिर के पीछे से ऊपर छत पर धजा लाकर कलश के आंटा दिया जाता है। वहां से निजमन्दिर के धजादण्ड के कलश के आंटा दिया जाता है। फिर मन्दिर की बाउण्ड्री के बाहर पीछे की पहाड़ी पर धजा ले जाई जाती है।

तीनों दर्जियों की धजायें वहां जाकर नप जाती हैं कि किसकी कितनी बड़ी होती है। नापते समय धजा नापने का काम मेवाड़ पटेल के जिम्मे रहता है। यह पटेल परम्परागत रूप से चलता रहता है। वर्तमान में मेवाड़ पटेल (सुई दर्जी) नाथद्वारा का कन्हैयालाल कनेरिया है। कोई अपनी धजा को खींचता नहीं है। ऐसा करने से उस समाज में खींच पड़ना समझा जाता है। जिसकी धजा छोटी निकलती है, उसकी समाज छोटी पड़ती रहेगी माना जाता है।

नंदकेशर तथा निजमन्दिर पर जो चढ़ते हैं वे डामर कहलाते हैं। ये भील होते हैं जो वंश परम्परा से चले आ रहे होते हैं। ये ही नापने के बाद पूरी धजा समेटते हैं और तदनन्तर मन्दिर में जमा कराते हैं।

धजा का यह लम्बा कपड़ा (108 गज) फिर टुकड़ों-टुकड़ों में निजमन्दिर में काम में लिया जाता है। इसके अतिरिक्त वहां आसपास जितने भी मन्दिर हैं उनमें नियमानुसार और धजाएं दी जाती हैं।

ये धजाएं टुकड़ों में चावल, सुपारी, पैसा आदि रख कर दे दी जाती हैं। इन मन्दिरों की पूरी सूची बनी हुई है। ये टुकड़े भी धजा ही कहलाते हैं। किसी मन्दिर के सात धजा (टुकड़े) तो किसी के नौ, इस प्रकार एकलिंगजी के अलावा ऐसी सौ-सवा सौ धजा मन्दिरों में दे दी जाती हैं। धजा चढ़ाने की यह परम्परा एक ऐसी परम्परा है जो अपनेआप में बड़ी अनोखी और अद्‌भुत है। एक तो इतनी बड़ी धजा शायद ही कहीं और किसी मन्दिर में चढ़ती हो और फिर चढ़ती हुई भी जहां तहां अनचढ़ी रह जाती है। यह धजा चढ़ती तो है पर कभी लहराती-फहराती नहीं। दर्जी समाज के लोगों को अपने पूर्वज धारा की शिवभक्ति ने इतना आस्थावान बनाये रखा कि आज भी उसी विरासत और वैभव का दिल लेकर प्रतिवर्ष वे धजा चढ़ाकर परम सुख पाते हैं। **- म. भा.**

साहित्यकारों की नोकझोंक

नन्द! गीत तो तारा के पास ही हैं

- श्रीकृष्ण शर्मा

उदयपुर में आयोजित एक कविसम्मेलन आकाशवाणी के उदयपुर केन्द्र से प्रसारित किया जाना था। उसमें डॉ. ताराप्रकाश जोशी एवं प्रो. नन्द चतुर्वेदी ने भी अन्य कवियों के साथ भाग लिया। प्रो. नन्द चतुर्वेदी की मातुश्री लीलावती चतुर्वेदी ने भी उसे पूरे मनोयोग से सुना। वे कविता की पारखी थीं।

ताराप्रकाश जोशी

प्रो. नन्द चतुर्वेदी जब रात्रि में घर आए तो वे बोली- नन्द! गीत तो ताराप्रकाश जोशी के पास हैं। तुम ऐसा नहीं लिख पाए। तुम ऐसा करो ताराप्रकाश से इसे कैसिट में भरवालो। मैं प्रत्येक दिन इसे रात सोने से पहले सुना करूँगी।

चतुर्वेदीजी ने डॉ. ताराप्रकाश जोशी को दूसरे दिन प्रात: चाय पर घर बुलाया और वह गीत कैसिट में भरवा लिया। गीत था-

साँझ हुई चल पंख समेटें।
उमर-उड़ान कहाँ थक जाये .
चल अछोर छाया में लेटें ।।
रूप निहारे रंग निहारे।
आकृति अंग निहारे।
जो छवि भाए सो छवि ओझल
दुनिया के सब संग उधारे।।
पल दो पल की आँख-मिचौनी
चल अदीठ आभा से भेंटे।।
साँझ हुई चल पंख समेटें।

प्रो. चतुर्वेदी की मातुश्री प्रतिदिन शयन पूर्व इस गीत को बेनागा अन्तिम स्वाँस तक सुनती रही। प्रो. चतुर्वेदी को डॉ. ताराप्रकाश जोशी के प्रति मन ही ईर्ष्या होना स्वभाविक था। उन्होंने भी मन ही मन संकल्प लिया कि अपने को भी इस गीत की टक्कर का गीत लिखना, सो उन्होंने भी उसी भाव, भाषा, शैली की तर्ज पर एक गीत लिखा। इसपर मातुश्री बोली, नन्द! वो बात बनी नहीं। प्रो. नन्द चतुर्वेदी का गीत मेरे कानों में कई बार आज भी गूंजता है जो है-

कितने प्रश्न कौन उत्तर दे?
यह किताब कोरी छलना है
यह रंगों की आतिशबाजी
हमको कहाँ-कहाँ जलना है?
कितनी दूर और चलना है?
कितने प्रश्न कौन उत्तर दे?

(इस स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशनार्थ रचनाएं आमंत्रित हैं। - संपादक)

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वाषिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन ई-मेल से भेजें।

shabdranjanudr@gmail.com

'प्राकृत साहित्य के विविध आयाम' पुस्तक लोकार्पित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। महाराणा प्रताप वरिष्ठ नागरिक संस्थान के महासचिव भंवर सेठ ने

श्रीमती डॉ. सरोज जैन की पुस्तक 'प्राकृत साहित्य के विविध आयाम' का लोकार्पण किया। पुस्तक का प्रकाशन भारतीय प्राकृत स्कालर्स सोसायटी उदयपुर द्वारा हुआ है। सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. प्रेमसुमन जैन ने पुस्तक का परिचय देते हुए कहा कि इसमें नारी उत्थान और पर्यावरण संरक्षण पर प्रकाश डाला गया है। चोसरलाल कच्छारा, कालूलाल नागौरी, ओंकार सिंह, प्रो. जिनेन्द्र जैन, राजकुमार खमेसरा, वरदान मेहता, जगदीश अरोड़ा ने श्रीमती जैन को बधाई दी।

रैपिडो ऑटो का 11 शहरों में विस्तार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। रैपिडो ने पाँच राज्यों के 11 अतिरिक्त शहरों में रैपिडो ऑटो सेवाओं के विस्तार की घोषणा की। इस सेवा द्वारा ग्राहक दैनिक आवागमन के लिए घर बैठे ऑटो बुक कर सकेंगे।

यह सेवा दिल्ली एनसीआर में सांसद महेश शर्मा की मौजूदगी में लॉन्च की गई। रैपिडो ऑटो सेवा अक्टूबर, 2020 में 10 राज्यों के 14 मुख्य शहरों में लॉन्च की गई जिसे बेहतरीन प्रतिक्रिया मिली और मांग बढ़ने के साथ इस सेवा का विस्तार हुआ। 11 अतिरिक्त शहरों के साथ रैपिडो ऑटो अब देश के 25 शहरों में उपलब्ध है।

रैपिडो के को-फाउंडर अरविंद संका ने कहा कि हमें भीड़ से भरे जन परिवहन और महंगी कैब्स की तुलना में आवागमन के खुले व सुरक्षित विकल्प की मांग देखने को मिल रही थी। कोविड-19 की महामारी के बाद ऑटो बाईक टैक्सी आवागमन के पसंदीदा माध्यम के रूप में उभरे हैं।

अमेज़न द्वारा एसएमबी इम्पैक्ट रिपोर्ट पेश

उदयपुर (विज्ञप्ति)। अमेज़न डॉट इन ने 2020 स्मॉल एंड मीडियम बिजनेस इम्पैक्ट रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें बताया गया है कि सेलर्स, डिलीवरी और लॉजिस्टिक्स पार्टनर्स, नेबरहुड स्टोर्स, एंटरप्राइजेज, डेवलपर्स, कन्टेंट क्रिएटर्स और भारत के लेखकों सहित कंपनी 10 लाख से अधिक एसएमबी को लाभ कैसे पहुंचाती है। अमित अग्रवाल, सीनियर वीपी और कंट्री हेड - अमेजन इंडिया, ने कहा कि भारत में अमेज़न से जुड़े 10 लाख से अधिक छोटे बिजनेस को देखना अभूतपूर्व रहा है और इसने हमारे काम करने और जीवन जीने के तरीके पर असर डाला है। हमें चुनौतियों से उबरने और विकसित होने के लिए बिजनेस, क्रिएटर्स, लेखकों आदि की उद्यमशीलता की भावना, रचनात्मकता, संकल्प और हम पर किया गया भरोसा हमेशा प्रेरित करता है।

पल्स कैंडी अब पल्स शॉट्स में

उदयपुर (विज्ञप्ति)। डीएस ग्रुप की नंबर वन कैंडी पल्स अब गोल छोटे आकार के फ्लेवर बम 'पल्स शॉट्स' में पेश की गई है। ये पल्स शॉट्स कैंडी स्वादिष्ट कच्चा आम फ्लेवर में उपलब्ध है।

इसके बीचोंबीच चट्कारेदार मज़ा है, जो एक बाइट साइज़ नन्हे कैंडी के रूप में है। पल्स शॉट्स के एक पाउच में करीब 9-10 शॉट्स होते हैं और 17 ग्राम का यह पाउच, 5 रुपये का है। पल्स पांच फ्लेवर - कच्चा आम, गुआवा, ऑरेंज, पाइनैपल और लीची में आती है।

गारंटीड पेंशन प्लान की पेशकश

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने 'आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन प्लान शुरू किया है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के चीफ डिस्ट्रीब्यूशन ऑफिसर अमित पलटा ने कहा कि यह वित्तीय रूप से स्वतंत्र सेवानिवृत्त जीवन जीने के लिए जीवनभर की आय की गारंटी देती है। यह एक नॉन-लिंक्ड नॉन-पार्टिसिपेटिंग व्यक्तिगत वार्षिकी उत्पाद है। इसमें ग्राहकों को तत्काल और स्थगित अवधि के साथ वार्षिकी का चयन करने की सुविधा मिलती है। हम ग्राहकों को जीवनभर की आय के समाधान की गारंटी देते हुए खुशी का अनुभव कर रहे हैं। यह एक ऐसी योजना है, जो वर्तमान दौर के अप्रत्याशित समय में निश्चिंतता प्रदान कर सकती है।

उन्होंने कहा कि ग्राहकों के लिए सुरक्षित सेवानिवृत्त जीवन की योजना बनाना एक तरह से जरूरी हो गया है। आईसीआईसीआई प्रू गारंटीड पेंशन विविधतापूर्ण सेवानिवृत्ति योजना है जो ग्राहकों को सेवानिवृत्त होने या बाद में नियमित आय प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

जिंक फुटबाल जैसी पहल राजस्थान और भारतीय फुटबाल को ऊपर ले जाएगी

उदयपुर (विज्ञप्ति)। राजस्थान सरकार के खेल एवं युवा मामलों के राज्यमंत्री अशोक चंदना ने जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने हिंदुस्तान जिंक की पहल जिंक फुटबाल के युवा फुटबालरों के साथ इंटरेक्टिव सेशन में हिस्सा लिया और वहां मौजूद विश्वस्तरीय सुविधाओं की सराहना की।

चांदना ने कहा कि इस तरह की पहल भविष्य में राजस्थान तथा भारतीय फुटबाल को नई उंचाइयों पर ले जाएगी। यहां मौजूद स्टेट-आफ-आर्ट सुविधाएं देखकर मुझे यकीन है कि इस पहल से न सिर्फ समुदायों को फायदा होगा बल्कि इससे राजस्थान और भारतीय फुटबाल को आने वाले समय में काफी फायदा होने वाला है।

चांदना ने कहा कि जिंक फुटबॉल अकादमी को बहुत ही प्यार और मोटिव के साथ बनाया गया है। यहां ट्रेनिंग पा रहे सभी बच्चे बहुत ही मोटीवेटेड हैं और वे जीवन में बहुत बड़ा लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। मैंने यहां आकर देखा कि आस-पास के गांवों के छोटे बच्चे भी शानदार तरीके से ट्रेनिंग पा रहे हैं। यूथ में बहुत ऊर्जा व कुछ कर गुजरने का जज्बा होता है। अगर उन्हें रोजगार व खेलों में लगा दिया जाए तो सोसायटी से क्राइम और नशाखोरी खत्म हो जाएगी।

इंदिरा आईवीएफ के देश में 1 लाख आईवीएफ प्रॉसिजर्स पूरे

उदयपुर (विज्ञप्ति)। इंदिरा आईवीएफ देश में 100,000 से अधिक प्रॉसिजर्स करने वाला पहला ऑर्गेनाइजेशन बन गया है जिसने भारत के सबसे बड़े इनफर्टिलिटी स्पेशलिस्ट क्लिनिक्स चेन के रूप में स्वयं को स्थापित किया है।

इंदिरा आईवीएफ के निदेशक नितिज मुर्डिया ने कहा कि भारत में इनफर्टिलिटी एक चिकित्सा स्थिति ही नहीं है बल्कि इसके परिणाम सामाजिक जीवन में भी देखने को मिलते हैं। उपचार कराने वाले कपल्स को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और परिणाम से जुड़ी अनिश्चितता सबसे बड़ी चिंता होती है। इस प्रकार, आईवीएफ साइकाल से सफल गर्भधारण का आश्वासन सर्वोपरि है। कूपर सर्जिकल के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. राजीव कायस्थ ने कहा कि इंदिरा आईवीएफ हमारी तकनीक के सबसे बड़े प्रयोक्ता है। आईवीएफ स्पेशलिस्ट्स एक समय में कई प्रॉसिजर्स पर काम करते हैं। आरआई विटनेस टेक्नोलॉजी एक फुल-प्रूफ सिस्टम है जो आईवीएफ प्रक्रिया के किसी भी चरण में किसी भी तरह के मिक्स-अप की संभावना को दूर करता है।

36,000 छात्राओं और 1100 शिक्षकों के साथ मनाया आनंद उत्सव

उदयपुर (विज्ञप्ति)। 'सखियों की बाड़ी' के सफलतापूर्वक कार्यसंचालन के 4 साल पूरे होने पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से आनंद उत्सव आयोजित किया। आईआईएफएल फाउंडेशन राजस्थान में देश के सबसे बड़े बालिका साक्षरता कार्यक्रमों में से एक 'सखियों की बाड़ी' का संचालन करता है। इस साक्षरता कार्यक्रम के तहत 36,000 ऐसी लड़कियों को शिक्षा के क्षेत्र में लाया गया, जो अब तक स्कूली शिक्षा से दूर थीं।

आनंद उत्सव की मेजबानी आईआईएफएल फाउंडेशन की निदेशक श्रीमती मधु जैन और ग्रुप के अध्यक्ष निर्मल जैन ने की। इस अवसर पर राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती संगीता बेनीवाल, सराडा ब्लॉक प्रधान श्रीमती बसंती मीणा, पुलिस उपाधीक्षक श्रीमती चेतना भाटी और राजस्थान राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य डॉ शैलेंद्र पंड्या ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। मधु जैन ने कहा कि इस कामयाबी के लिए हम राज्य सरकार, ग्रामीण समुदाय, 1100 शिक्षकों और 36,000 बच्चों के माता-पिता का धन्यवाद करते हैं, जिनके सहयोग के बिना यह संभव नहीं था। हमारा मिशन राजस्थान में 100 फीसदी बालिका साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करना है और सभी हितधारकों के साथ इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में काम करेंगे।

कोविड संबंधी पाबंदियां हटने के बाद भी जारी रहेगी ई-कॉमर्स में तेज़ी की रफ्तार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। फेडेक्स एक्सप्रेस ने भारत के छोटे एवं मध्यम उद्योगों पर केंद्रित हालिया सर्वे के नतीजे पेश किए हैं। इस सर्वे को स्वतंत्र रिसर्च फर्म डन एंड ब्रैडशीट इंडिया ने किया ताकि एसएमई के बीच कोविड-19 महामारी के दौरान ई-कॉमर्स और डिजिटल ट्रेंड्स की पहचान की जा सके।

सर्वे में पता चला कि ई-कॉमर्स बिक्री में हुई बढ़ोतरी की वजह से भारतीय एसएमई आशावादी हैं। लॉकडाउन शुरू होने के बाद से 30 प्रतिशत छोटे उद्योगों और 40 प्रतिशत मझोले उद्योगों ने ई-कॉमर्स बिक्री में बढ़ोतरी की बात मानी। महामारी और उससे उपजी पाबंदियों के कारण ई-कॉमर्स के प्रति लोगों के नजरिये में बदलाव आया है। सर्वे में शामिल 35 प्रतिशत छोटे और 54 प्रतिशत मझोले उद्योगों का मानना है कि कोविड-19 के बाद भी ई-कॉमर्स बिक्री से उनकी आर्थिक तरक्की होगी। त्योहारों में एसएमई अपनी ई-कॉमर्स क्षमता में इजाफा कर रहे हैं और अच्छी बिक्री की उम्मीद में अपनी ऑनलाइन शॉपिंग रणनीति में सुधार ला रहे हैं।

जिंक फुटबाल अकादमी ने जीती फुस्टाल चैम्पियनशिप

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जिंक फुटबाल अकादमी की अंडर-17 टीम ने जयपुर में आयोजित अंडर-19 फुस्टाल चैम्पियनशिप जीत ली है।

कोच सुनील दत्त ने कहा कि जिंक फुटबाल अकादमी ने अपने अभियान की शुरुआत उत्तरप्रदेश पर 10-0 की जीत के साथ की और इसके बाद गुजरात को 5-1 से और तेलंगाना को 8-0 से हराया। क्वार्टर फाइनल में राजस्थान को 3-0 से हराया। इसके बाद टीम ने सेमीफाइनल में मध्यप्रदेश को 5-1 से हराते हुए फाइनल खेलने का गौरव हासिल किया। फाइनल में जिंक फुटबाल के लड़कों ने असम को 4-3 से हराया। मैच हालांकि काफी चुनौतीपूर्ण रहा और यह टाईब्रेकर तक खींचा, जिसमें जिंक फुटबाल के लड़के विजेता बनाकर उभरे। जिंक फुटबाल के लिए आशीष मायला टॉप स्कोरर रहे। आशीष ने 15 गोल किए जबकि मोहम्मद रियाज ने 8 गोल किये। दत्त ने कहा कि लड़कों ने हर एक गेंद के लिए संघर्ष किया। हमारे लिए यह टूर्नामेंट खास था।

नारायण सेवा संस्थान का 35वां दिव्यांग सामूहिक विवाह समारोह

7 फेरे लेकर नए जीवन की डोर में बंधे 11 जोड़े

उदयपुर (विज्ञप्ति)। होठों पर मुस्कान, दिल में नवजीवन की उमंगें और जीवन साथी का साथ पाकर खिले हुए चेहरों ने मौसम के ठंडे मिजाज में गर्मजोशी से बंधे नए रिश्तों की मिठास घोल दी। अपनों के बीच हर कोई अपना, मानों सच हुआ बरसों पुराना सपना। यह समां था नारायण सेवा संस्थान के 35वें सामूहिक विवाह समारोह का।

नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा मुख्यालय पर 27 दिसंबर को कोविड-19 गाइडलाइंस की पालना करते हुए धूमधाम से हुए इस सामूहिक विवाह समारोह में दिव्यांग और वंचित वर्ग के 11 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे। इससे पूर्व विवाह की सभी रस्में पूरे ठाट-बाट के साथ संपन्न हुई। कोविड -19 से संबंधित प्रोटोकॉल के कारण इस बार विवाह समारोह में केवल रिश्तेदारों और जोड़ों के शुभचिंतकों को ही प्रवेश दिया गया। संस्थान परिसर में सजे भव्य पांडाल में पंडितों के मंत्रोच्चार के बीच जोड़ों ने सात फेरे लिए। इसके बाद दानदाताओं ने कन्या दान के रूप में घरेलू उपकरणों और उपहार में अन्य घरेलू वस्तुओं का इंतजाम किया। विदाई की वेला में सबकी आंखें नम हो आईं तथा सभी ने वर-वधू को सुखी दाम्पत्यजीवन का शुभाशीष दिया। जोड़ों ने नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमैन कैलाश मानव से भी आशीर्वाद लिया।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि सभी जोड़ों ने अग्नि के समक्ष फेरे लेने के साथ ही नियमित तौर पर मास्क पहनने व कोरोना महामारी के प्रति जन जागरण का प्रण भी लिया। सामूहिक विवाह समारोह एक ऐसा आयोजन है जो हमारे दिल के बेहद करीब है। संस्थान का विशेष अभियान- 'दहेज को कहें ना!' भी इसी से जुड़ा है। हम पिछले 18 वर्षों

से इस अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं। संस्थान के प्रयासों से अब तक 2098 जोड़े सुखी और

संपन्न वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं। सभी के लिए एक स्थायी आजीविका प्रदान करने के लिए हम नि:शुल्क सुधारात्मक सर्जरी, कौशल विकास से संबंधित कक्षाएं और सामूहिक विवाह समारोहों का आयोजन करने के साथ-साथ प्रतिभाओं को विकसित करने से संबंधित गतिविधियों से जुड़ी सेवाएं भी प्रदान करते हैं। संस्थान में दिव्यांग और वंचित लोगों की सेवा करके उन्हें सशक्त बनाया है और उन्हें स्थायी आजीविका प्रदान की है।

राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात और कई अन्य राज्यों के लोगों ने नारायण सेवा संस्थान से संपर्क किया था और अपने विवाह के लिए सहायता करने का आग्रह किया था। संस्थान न सिर्फ दिव्यांगों की भलाई के काम में जुटा है, बल्कि संस्थान का निरंतर यह भी प्रयास रहा है कि दिव्यांग लोगों को समाज में सामान्य तौर पर स्वीकार किया जाए और उन्हें आगे बढ़ने के समान अवसर उपलब्ध कराए जाएं।

समारोह में शादी के बंधन में बंधे पूजा और कमलेश ने अपने अनुभव साझा करते हुए नारायण सेवा संस्थान के प्रयासों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पूजा ने कहा, 'मैंने एक दुर्घटना में अपना पैर खो दिया था। मैंने नारायण सेवा संस्थान में संपर्क किया और यहां एक सर्जरी के माध्यम से मेरा नि:शुल्क इलाज किया गया। यह ऐसी सर्जरी थी, जिसके लिए काफी खर्च करना पड़ता। मुझे खुशी है कि मैं अब इस सर्जरी के कारण एक अच्छी जिंदगी जी सकती हूं। मैं अपने जीवन साथी कमलेशजी से मिलकर बहुत खुश हूं।

कमलेश 3 साल की उम्र में पोलियो से ग्रसित हो गया। नारायण सेवा संस्थान में उनकी सर्जरी की गई और आज वह बैसाखी की मदद से चल-फिर सकता है। कमलेश का कहना है कि दिव्यांग होना सिर्फ एक शारीरिक विकार है, यह बीमारी नहीं है। मैं हमेशा भावनात्मक रूप से बहुत मजबूत रहा हूं और चुनौतियों का सामना किया है जिन्होंने मुझे मजबूत बनाया है। मैंने किराने की दुकान से अपना व्यवसाय शुरू किया और पंचायत सहायक के रूप में नौकरी हासिल की। मुझे खुशी है कि नारायण सेवा संस्थान की सहायता से मुझे जीवनसाथी मिला।

सोजतिया ज्वैलर्स की एक्सचेंज स्कीम गोल्डन वॉलेट शुरू

उदयपुर (विज्ञप्ति)। सोजतिया ज्वैलर्स समय-समय पर जनता के हितार्थ अनेक स्कीम लेकर आता है। सोजतिया ज्वैलर्स के निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि हाल ही में ग्राहकों के लिये एक्सचेंज स्कीम गोल्डन वॉलेट लागू की गई जिसका लाभ उठाने शोरूम पर प्रतिदिन भीड़ उमड़ रही है। ग्राहक इस स्कीम के तहत जीरो मेकिंग चार्ज पर अपना पुराना गोल्ड जमा करा रही है।

ध्रुव सोजतिया ने बताया कि गाहक के सामने ही पुरानी गोल्ड ज्वैलरी में लगे नगीने, स्टोन, चपड़ी, धागा आदि हाटकर पिघलाया जा रहा है। तत्पश्चात उस गोल्ड की केरेट मीटर पर शुद्धता जांची जाती है। उस गोल्ड को 916 गोल्ड में बदला जाता है। ग्राहक को उस गोल्ड के बदले 10 माह बाद 916 हॉलमार्क वाली नई लेटेस्ट डिजाईन की ज्वलैरी बिना किसी मेकिंग चार्ज के दी जायेगी।

कोरोना संक्रमित गंभीर रोगी का सफल उपचार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में कोरोना से संक्रमित हुए डायबिटीज़ के रोगी का पल्मोनोलोजिस्ट व श्वसन रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुल लुहाड़िया, डॉ. अदित जोटा व टीम द्वारा सफलतापूर्वक उपचार किया गया।

डॉ. अतुल ने बताया कि डायबिटीज़ के 42 वर्षीय उदयपुर के एक रोगी को गत दिनों खांसी, जुकाम और बुखार की शिकायत पर गीतांजली हॉस्पिटल में लाया गया। तब मरीज का ऑक्सीजन लेवल 75-80 प्रतिशत था। तुरंत सीटी स्कैन किया जिसमें पता चला कि कोरोना वायरस ने फेफेड़ों को संक्रमित कर दिया है। रोगी को तुरंत आईसीयू में भर्ती किया गया। उसका कोविड- 19 आरटीपीसीआर टेस्ट पॉजिटिव आया। रोगी 15 लीटर ऑक्सीजन पर पहुँच चुका था जो बहुत हाई-लेवल माना जाता है। उसे एंटीबायोटिक्स, स्टेरोइड्स, खून पतला करने की दवा, रेम्देसेवियर, विटामिन-सी इत्यादि सभी आवयश्क दवाओं के साथ प्लाज़्मा भी दिया गया।

इसके बाद रोगी में धीरे-धीरे सुधार आना शुरू हुआ और ऑक्सीजन की आवश्यकता कम होती गई। रिपीट कोरोना सैंपल नेगेटिव आया। रोगी को हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर जरूरी दवाइयां लेने की हिदायत दी गयी। अभी रोगी घर पर स्वस्थ महसूस कर रहा है।

टुकड़े-टुकड़े जिये.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

नववर्ष, होली, दीपावली जैसे अवसरों पर उनकी शुभकामनाएं प्राप्त कर मैं भी उन्हें उसी अंदाज में अपनी भावना व्यक्त करने में कभी पीछे नहीं रहा। नववर्ष 2004 पर उन्होंने ये दो पंक्तियां लिख भेजीं-

यश, धन, जीवन अभय हो, मिटें सभी संताप।
हर दिन हो त्योहार सा, स्वस्थ रहें नित आप।।

इस पर मैंने भी ये दो पंक्तियां लिख भेजीं। ऐसे पत्र वे सदैव कवितामय ही लिखते।

सुयश, सुमंगल सुरभि का, सुख सौभाग्य सुनाम।
पूरण हो सह गल मिलैं, सुर साहित्य सुदाम।।

सहगलजी के कुछ पत्र तो बड़े ही विचारशील और अनुभव पारखी हैं। उनसे लोकसंस्कृति और इस साहित्य के प्रति उनका जुड़ाव आनन्द से परमानन्द का आभास लिये देखा जा सकता है। मैं जब भी मेरी कोई पुस्तक प्रकाशित होती, उन्हें भेजता ही भेजता। कभी चूक हो जाती और उन्हें कहीं से आभास हो जाता तो वे विनयपूर्वक उसे कहां से कैसे प्राप्त करने का तत्काल पत्र लिख देते।

मैंने उन्हें जब 'राजस्थान के लोकनृत्य' पुस्तक भेजी तो उन्होंने उसे पढ़कर एक लम्बी चिट्ठी लिखी। यहां उसके मैं कुछेक अंश दे रहा हूं-

लोकजीवन से जुड़ाव होना बहुत कठिन काम है। इससे भी कठिन है लोकजीवन से जुड़े तारों को तोड़ लेना। जितना बजेंगे ये तार उतना ही मिठास भरा संगीत बिखेरेंगे। लोकजीवन से जुड़ना आनन्द से भी आगे परमानन्द का आभास है। जिसने गहरे पानी में गहरी गोत लगा ली वह तो बेशकीमती रत्न निकाल लाया और जो किनारे बैठकर डूब जाने के डर से अब-तब करता रह गया सो रह गया खाली हाथ।

डॉ. भानावत ने सभी 156 नृत्यों को देखा है। उनका आनन्द लिया है। उनके चरित्र को पहचाना है। उनकी गत-मत-गम्मत और ताल-लय की जानकारी प्राप्त कर उसे जीने का भी प्रयत्न किया है। प्रत्येक लोकनृत्य का समय, स्थान, परम्परा और ऋतु-पर्व तक की परख उन्होंने की है।

वे यह भी लिखते हैं कि लोकसाहित्य के पैर नहीं होते, पंख होते हैं। वह अपने सशक्त पंखों से अगम सुगम और सात समुंद्र पार तक की यात्रा करने की क्षमता रखता है। लोकसाहित्य और लोककला के क्षेत्र में सुरम्य एवं सुरंगा राजस्थान सर्वोपरि है। इसके निकटतम पड़ौसी मधुरम और मनोरम दशपुर अंचल की मालव लोकसंस्कृति इस पर गर्व कर सकती है।

राजस्थान का जब-जब भी कोई प्रसंग चलता है वे अपने मालव को सदैव याद किये रहते हैं। जब भी उनसे मिल बैठकर कोई चर्चा होती और नहीं भी होती तो भी वे अनायास ही कोई प्रसंग ऐसा ले आते। मैंने हर प्रसंग पर उनको अपने मालव पर गर्वोन्नत होते देखा और यही वजह है कि उन्होंने मालव लोकसंस्कृति अनुष्ठान नाम से बहुत प्रारम्भ में ही एक संस्था का बीजारोपण भी कर दिया था।

डॉ. सहगल की सर्वाधिक नजदीकी बालकवि बैरागी से रही। मनासा में रहते कोई दिन नहीं टूटा जब दोनों ने उनके निवास पर चायपान नहीं लिया हो। उन्हीं से वे निरन्तर प्रोत्साहन और प्रेमाचार पाते रहे। जीवन के इस पड़ाव में उनके साथ अब उनके जैसे कोई संगी नहीं रहे।

पहले पत्नी कृष्णा और फिर बैरागीजी दोनों का विछोह उन्हें बुरी तरह खलता कचोटी देता आज भी बेचैन किये है। ऐसे में उनका और मेरा दोनों का मैत्री-व्यवहार नदी के दो किनारों की तरह एक-दूसरे को बांधे हुआ है। उन्हें इस बात का परम संतोष है कि अभाव को स्वभाव बना टुकड़ों-टुकड़ों में अपना जीवन चलाया जा सकता है मगर किसी के टुकड़ों पर नहीं पल कर स्वाभिमान का सूर्य ही अन्ततोगत्वा जीवनान्धकार को पछाट सकता है।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (4)

- देवीलाल सामर -

''जब मैं भीली क्षेत्रों में अपने फिल्मदल एवं शोधार्थियों के साथ गया तो हमें कई रातें ठिठुरन में निकालनी पड़ीं। कई बार भूखे-प्यासे विचरण करना पड़ा। खेरवाड़ा के पास के एक गांव में तो हम पर पत्थरों की बौछार हुई और हमें अपने बोरिया बिस्तर वहीं छोड़कर लगभग 10 मील तक अपनी जान बचाकर भागना पड़ा।''

इस ओर 1955 में हमने एक कदम आगे बढ़ाया। हमने योजनाबद्ध तरीके से आदिवासियों की कला-संस्कृति की खोज-सर्वेक्षण का एक महत्वपूर्ण कार्य हाथ में लिया। मैं और गोविन्द इस दिशा में किसी दूसरे लख्य को लेकर प्रविष्ट हुए। वह था आदिम जातियों के संस्कृति के कुछ नमूनों का चित्रांकन।

उस वक्त तक हमें अच्छे फिल्मी केमरे और स्टील केमरे भी उपलब्ध हो चुके थे। आदिम संस्कृति के अध्ययन की हमारे पास कोई विशिष्ट योजना नहीं थी परन्तु केमरे पर हाथ साफ करने हेतु आदिम जातियों के विशिष्ट कलात्मक पक्षों के सुन्दर चित्र खींचने गांवों में जाते तो हमें ऐसा लगा कि यह तो एक निराली दुनिया है जिसका केवल मात्र चित्रण ही काफी नहीं है। उसका गहरा अध्ययन एवं सर्वेक्षण भी आवश्यक है।

हमने इस संस्कृति का स्खलन भी बड़ी तेजी से देख लिया था। हमारे बड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं की दृष्टि भी इसके प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं थी। वे इनके नाच-गान, पर्व-उत्सव और त्यौहारों को निरर्थक ही नहीं, उनके लिए अहितकर मानते थे। वे ऐसा मानकर चलते थे कि इनकी इन्हीं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के कारण वे पिछड़े हुए, परित्यक्त एवं निर्धन बने हुए हैं। अत: हमारे इस प्रकार के कार्य को भी वे अच्छी निगाह से नहीं देखते थे। वे उनकी मांस, मदिरा, नाच-गान एवं पुरातन आस्थाओं को मिटाने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते थे।

उनके जीवन की रंगीनियां धीरे-धीरे कम होती गईं। बदले में जो उन्हें मिलना चाहिये वह भी जब उन्हें ठीक से नहीं मिला तो जो था उसे खोकर और भी अधिक कंगाल बन गये। आर्थिक कंगाली के साथ उन्हें सांस्कृतिक कंगाली का भी मुंह देखना पड़ा। इस प्रक्रिया ने मुझे सर्वाधिक दु:खी बना डाला। मैंने उन दिनों भरपूर लेखादि लिखे। बड़े-बड़े नेताओं से चर्चाएं कीं। कुछ ने तो मेरा सार्वजनिक रूप में बहिष्कार भी किया।

एक महान नेता ने तो इतना तक कहा कि सामरजी और उनका कला मण्डल आदिम जातियों के उत्थान में सर्वाधिक रोड़ा बने हुए हैं। कुछ भीली क्षेत्रों में तो हमारे काम में व्यवधान भी पैदा किया गया और हमें संदेह की निगाह से देखा गया। मुझे याद है जब मैं भीली क्षेत्रों में अपने फिल्मदल एवं शोधार्थियों के साथ गया तो हमें कई रातें ठिठुरन में निकालनी पड़ीं। कई बार भूखे-प्यासे विचरण करना पड़ा। खेरवाड़ा के पास के एक गांव में तो हम पर पत्थरों की बौछार हुई और हमें अपने बोरिया बिस्तर वहीं छोड़कर लगभग 10 मील तक अपनी जान बचाकर भागना पड़ा।

इस घटना से इस कार्य के प्रति मेरी निष्ठा और अधिक बढ़ गई और मैंने संकल्प कर लिया कि मेरा कार्य केवल फिल्मीकरण एवं फोटोकरण तक ही सीमित न रहकर इन जनजातियों के सांस्कृतिक संरक्षण में पूरी तरह सराबौर हो जाएगा। हम कला मण्डल के अन्य कार्य को थोड़ा शिथिल करके इसी कार्य में लग गये और दक्षिणी-पश्चिमी राजस्थान में बसने वाली समस्त भीली जातियों के सांस्कृतिक पक्षों की विशद जानकारी प्राप्त कर ली।

एक बार किसी दावत में तत्कालीन मध्य भारत सरकार के समाज कल्याण मंत्री श्री प्रेमसिंहजी राठौड़ से मेरी भेंट होगई। बात ही बात में मैंने राजस्थानी भीली क्षेत्र के मेरे सांस्कृतिक सर्वेक्षण की चर्चा करदी। उन्हें मेरा काम बहुत पसंद आया और इसी प्रकार का कार्य तत्कालीन मध्यभारत की आदिम जातियों के लिए करने का प्रस्ताव दिया। मैंने उस

प्रस्ताव को तत्काल ही मंजूर कर लिया। योजना भेज दी गई तथा उसके लिए मध्यभारत शासन की तरफ से एक छोटा सा अनुदान भी स्वीकृत हो गया।

इस कार्य को सम्पन्न करने में हमें पूरे चार महीने लगे। मध्यभारत का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जहां हम न गये हों। शासन ने हर प्रकार की सुविधा हमें प्रदान की। हमारे सांस्कृतिक सर्वेक्षण के विषय बने मध्यभारत के सैलाना, झाबुआ आदि क्षेत्रों के भील।

नर्बदा घाटी के गोंड तथा कक्षी आदि क्षेत्रों के भील, भिलाले, पटलिये एवं बारेलो। चूंकि मैं अपनी विविध पुस्तकों एवं लेखों में इन सांस्कृतिक सर्वेक्षण की विशद व्याख्या एवं विवेचन कर चुका हूं अत: उनके विस्तार में यहां न पड़कर इतना ही कहना पर्याप्त समझता हूं कि इस कार्य ने हमारी दृष्टि को और गहरा बनाया तथा आदिम जीवन के विविध पक्षों में गहराई से उतरने की क्षमता प्रदान की।

मध्यभारत के आदिवासियों के सांस्कृतिक पक्ष राजस्थान की तरह अधिक क्षतिग्रस्त इसलिए भी नहीं हुए कि वहां सामाजिक कार्यकत्ताओं की दृष्टि अधिक नहीं पड़ी। बात यह है कि सामाजिक सुधार तो आवश्यक होता ही है परन्तु सांस्कृतिक पक्षों की कीमत पर नहीं। जब हम उनके सांस्कृतिक पक्षों को ही उनके अवगुण समझने लगते हैं, तभी नुकसान का अंदेशा रहता है। हमारे सामाजिक नेताओं की दृष्टि इस ओर बहुत ही संकीर्ण रही है। वे इस पक्ष के मनोवैज्ञानिक पक्ष से परिचित नहीं थे। यदि उनके सांस्कृतिक पक्ष प्रबल नहीं होते तो उनका आर्थिक पक्ष उनको जिन्दा भी नहीं रहने देता। वह उनके भावात्मक परिष्कार के लिए सर्वथा उत्तरदायी था। जहां-जहां उनके सांस्कृतिक पक्ष कमजोर थे या बनाये गये वहां उनके दु:खों एवं कुंठाओं का कोई पारावार नहीं रहा एवं उनके जीवन में अनेक अवगुणों ने प्रवेश किया।

जब हमारा यह काम सम्पन्न हुआ तो मध्यभारत प्रशासन ने हमारे काम की एक वृहद प्रदर्शनी आयोजित की। उसमें अनेक सांस्कृतिक पक्षों के चित्र, नक्शे, फोटो एवं सांस्कृतिक सामग्री का प्रदर्शन हुआ। स्थानीय एवं अखिल भारतीय पत्रों ने भी इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की।

मध्यभारत के आदिम क्षेत्रों के सांस्कृतिक सर्वेक्षण की चर्चा तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पंत तक पहुंचे बिना इसलिए नहीं रह सकी क्योंकि राज्य सरकारों को आदिम क्षेत्रों के लिए पर्याप्त मात्रा में अनुदान केन्द्रीय सूचना राज्य मंत्रालय से मिलता था। मुझे इसकी सूचना राज्यमंत्री श्रीयुत्त प्रेमसिंहजी से मिल चुकी थी। मैं भी यह चाहता था कि किसी तरह पंडित पंत इस कार्य में रूचिशील बनें और समस्त देश के आदिम क्षेत्रों के सर्वेक्षण का कार्य हमें सौंपा जाय।

यह बात एक विचित्र सी घटना के साथ चरितार्थ हुई। संयुक्त कांग्रेस के 1955 में होने वाले गोहाटी कांग्रेस में सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु हम आमंत्रित हुए। हमारा कार्यक्रम रंगमंच पर चल रहा था और मैं दर्शकों के बीच अपने कार्यक्रम की प्रतिक्रिया देख रहा था। जहां भीड़ में मैं खड़ा था उसके आगे ही एक वृद्ध व्यक्ति मेरा कार्यक्रम देखकर आल्हादित हो रहे थे। किसी ने कहा ये गृहमंत्री पंडित पंत हैं। मैंने उन्हें नमस्कार किया और कहा कि मैं देवीलाल सामर हूं। यह मेरा ही दल प्रदर्शन दे रहा है। पंतजी ने मुझे बधाई दी और कहा कि क्या आप वे ही देवीलाल सामर हैं जिन्होंने मध्यभारत की आदिम जातियों का कार्य किया था।

मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पंतजी कहने लगे कि आप सारे ही देश का कार्य क्यों नहीं लेते। नेकी और पूछ-पूछ की बात चरितार्थ हुई। मैंने हामी भरदी। उदयपुर लौटने पर योजना प्रस्तुत कर दीगई और गृह मंत्रालय ने निर्णय भी ले लिया कि यह कार्य लोककला मण्डल को सौंप दिया जाय। अठारह हजार की राशि एक राज्य के सर्वेक्षण के लिए स्वीकृत हुई। सर्वप्रथम मध्यप्रदेश का कार्य प्रारम्भ हुआ। हम लोग लगभग छह माह तक अपनी सर्वेक्षण युनिट के साथ मध्यप्रदेश के आदिम क्षेत्रों में रहे। मेरे जीवन का यह मनोरम अनुभव था। राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त भारत सरकार की सब सुविधाएं हमें उपलब्ध थीं। मैं, मेरा पुत्र गोविन्द, राजेन्द्रसिंह बारहठ तथा नारायणलाल गंधर्व आदि इस कार्य में सहायक बने।

एक स्टेशन वेगन, केमरे, रेकार्डिंग मशीन हमारे साथ में थी। सर्वप्रथम मध्यप्रदेश के बस्तर क्षेत्र का कार्य प्रारम्भ हुआ। यह बड़ा घना क्षेत्र था। जंगलों की बहार थी। नदी-नाले एवं पहाड़ों का यह प्रदेश जितना मनोरम था उतना ही भयावना भी था। इस क्षेत्र में लगभग 24 आदिम जातियां निवास करती थीं जिन्हें यदि कोई पहलीबार देखले तो भयभीत हो जाये।

नंगे शरीर, काले कलुटे हथियारों से लेस एवं अन्य सामग्री से अलंकृत यह मानव समाज हमारे अध्ययन का दिलचस्प विषय बना। नाच-गान इनके जीवन का प्रिय अंग था। खेतीबाड़ी न तो ये जानते थे और न इस पर इनका जीवन ही अवलंबित था। पग-पग पर इनके विश्वास काम आते थे। जीवन का हर प्रसंग चाहे वह आनंद ही का क्यों न हो, देवी-देवताओं, पुरखों, प्रेतात्माओं एवं सिरहों पर अविलंबित था। नानाप्रकार के उत्सव-पर्व भी इन्हीं देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मनाये जाते थे।

इनके जन्म, मरण, विवाह आदि के सभी पर्व नाच-गान, विशिष्ट पहिनावा, साजसज्जा से सुशोभित होते थे। वे अपने जीवन में किसी प्रकार का बाहरी व्यवधान पसंद नहीं करते थे। इसीलिए शहरी सभ्यता से दूर वे कहीं एकाकी जीवन जीना ही पसंद करते थे। इनके जीवन मूल्य चाहे वर्तमान नैतिक मूल्यों से मेल न खाते हों पर वे ईमानदारी, सच्चाई, सद्भाव, सौहार्द्र, सेवाभाव एवं सामंजस्यपूर्वक जीवन जीने के आदी थे। जातीय संगठन इनका बहुत मजबूत था। वही उनका सबकुछ था। देशकाल की भावना से वे बहुत दूर थे। जहां रहते थे वही क्षेत्र उनका देश था तथा जिस जाति के वे थे वही उनका संसार था। रोजमर्रा का जीवन चल जाय उतना मात्र उनको चाहिए था। आगे की चिन्ता वे नहीं करते थे। इस दृष्टि से वे पूर्ण रूप से अपरिग्रही थे।

हमारे अध्ययन का विषय इनकी यही जीवनपद्धति थी जो आनंद, उल्लास, अनुरंजन, नाच-गान, उत्सव-पर्व, मेलों-हाटों एवं देव-पूजा से सराबौर थी। बस्तर की इन वन्य जातियों में माडिया, मूडिया, कुरवा, पांडव, गौड़, बेगा, कोडकुस, डोलरा, पीजा आदि जातियां प्रमुख थीं। यों तो इन जातियों के साथ मैं अपने अनुभव वर्णित करूं तो पूरी एक किताब ही बन जाय पर कुछ अत्यंत चमत्कारिक अनुभव मात्र ही यहां उल्लेखित करना पर्याप्त होगा।

जब हम बस्तर के अबूझमाड़ क्षेत्र में अबूड़माड़ जाति के अध्ययन के लिए तैयार हुए तो हमें सभी ने यही कहा कि आप अबूझमाड़ की पर्वत मालाओं पर न जावें। वहां न तो कोई सड़क है और न आपका वाहन ही वहां पहुंच सकता है। वे लोग बड़े खूंख्वार हैं। किसी भी पराये मानव का पदार्पण वे सहन नहीं कर सकते। उसे तुरन्त अपने तीर-कमानों का शिकार बना डालते हैं। यहां तक कि यहां का तहसीलदार भी लगान वसूली के लिए उधर नहीं जाता।

-क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।